मेरीखेती

जुलाई , 2024 | मुल्य : रु49

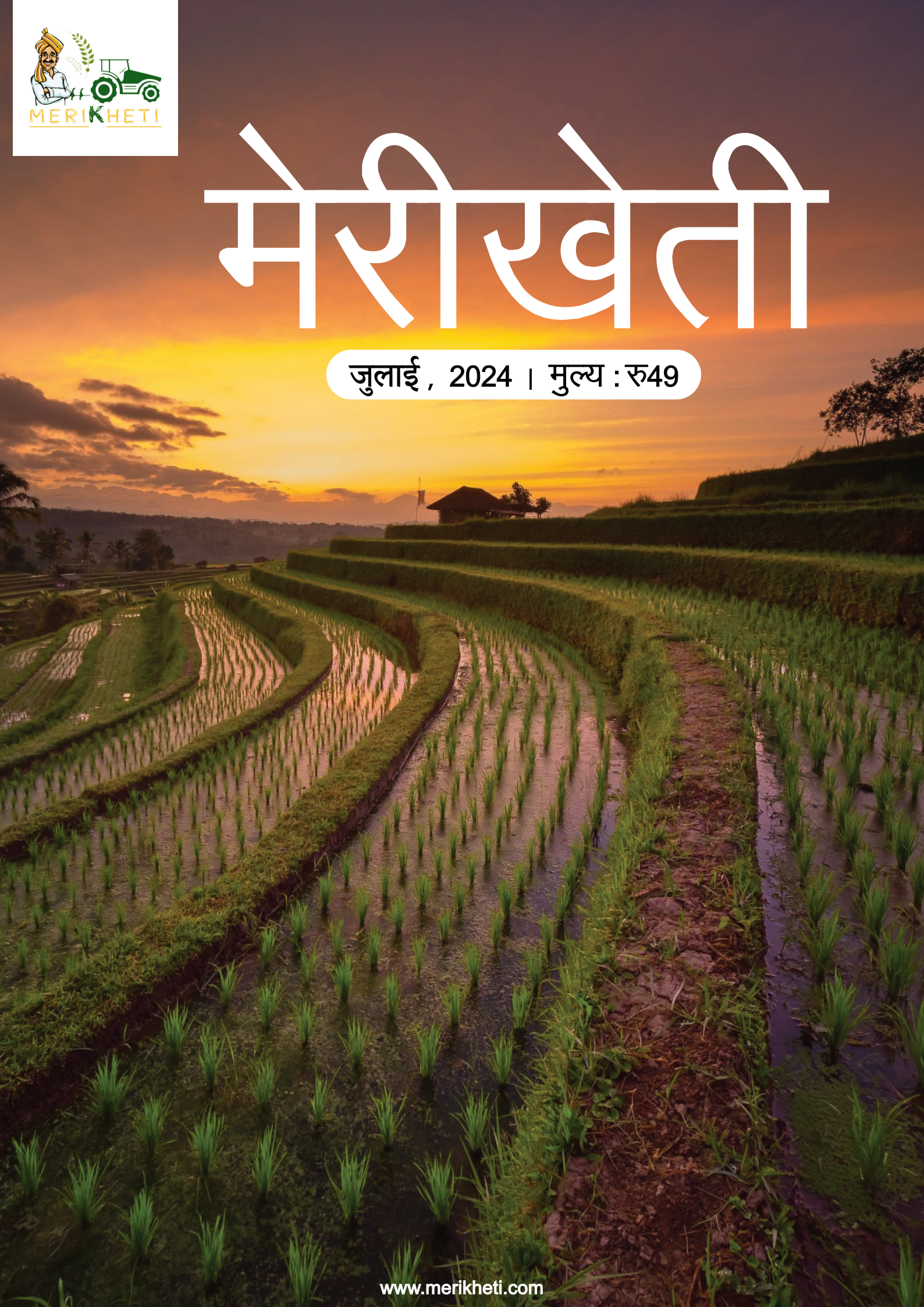

www.merikheti.com

विषय सूची

सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

खेत खलियान	01 - 07
बागवानी फसलें	08 - 13
पशुपालन–पशुचारा	14 - 17
मशीनरी	18 - 25
मौसमी व अन्य कृषि सुझाव	26 - 27
सरकारी नीतियां	28 - 29
औषधीय खेती	30

विज्ञापन के लिए संपर्क करें : 91-9899991906, 91-8800777501

सम्पादकीय

आधुनिक समय में बढ़ता तापमान खेती के लिए बड़ा संकट

आज के आधुनिक युग में जहां विज्ञान की नई खोज से सब कुछ डिजिटल हो गया है। इस आधुनिकता से आज के युग के लोगों को बहुत फायदा हो रहा है। दूसरी तरफ आधुनिकरण के कारण वातावरण को बहुत गंभीर नुकसान हो रहा है। निरंतर तापमान में वृद्धि के कारण खेती पर भी संकट मंडरा रहा है।

तापमान वृद्धि से खेती पर पड़ने वाले प्रभाव

फसल उत्पादन पर प्रभाव:

फसल की पैदावार में कमी: अत्यधिक गर्मी और असामान्य मौसम पैटर्न के कारण फसल की पैदावार में कमी हो रही है। कई फसलों की उपज और गुणवत्ता दोनों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। फसल वृद्धि का समय: बढ़ते तापमान से फसलों का वृद्धि चक्र बदल जाता है, जिससे उनकी बुवाई और कटाई के समय में बदलाव आ सकता है।

जल संसाधनों पर प्रभाव:

जल की कमी: बढ़ते तापमान के कारण जलवायु परिवर्तन से बर्फ और ग्लेशियर पिघलने लगते हैं, जिससे ताजे पानी की उपलब्धता में कमी आती है। सिंचाई के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध नहीं होने से फसलें प्रभावित होती हैं। भूजल स्तर का गिरना: सूखे के कारण भूजल स्तर में गिरावट आ रही है, जिससे सिंचाई की कठिनाइयाँ बढ़ रही हैं।

मिट्टी की उर्वरता पर प्रभाव:

मिट्टी का क्षरण: तापमान में वृद्धि से मिट्टी की संरचना और उर्वरता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इससे मिट्टी का कटाव और क्षरण बढ़ जाता है। मिट्टी में नमी की कमी: अधिक तापमान के कारण मिट्टी में नमी की कमी हो जाती है, जिससे फसलें पर्याप्त पानी और पोषक तत्व नहीं प्राप्त कर पाती हैं।

कीट और रोग:

कीट और रोगों का प्रसार: गर्म तापमान और असामान्य मौसम की स्थिति से कीट और रोगों का प्रसार बढ़ जाता है। नई परिस्थितियों में इनकी संख्याओं और गतिविधियों में वृद्धि हो सकती है, जिससे फसलों को अधिक नुकसान होता है। नए कीट और रोग: बदलते जलवायु के कारण नए कीट और रोग उत्पन्न हो सकते हैं, जिनसे निपटने के लिए किसानों को नए तरीके और उपाय अपनाने पड़ते हैं

श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीखेती

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई
इज्जतनगर

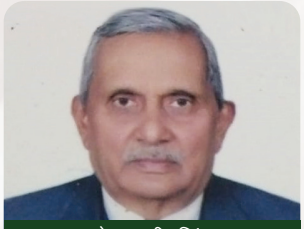

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय,
मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट,
गलगोटिया विश्वविद्यालय

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त)
उत्तर प्रदेश

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर,
राजस्थान

डॉ. अनिल कुमार सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद
केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन
(एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

डॉ सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा

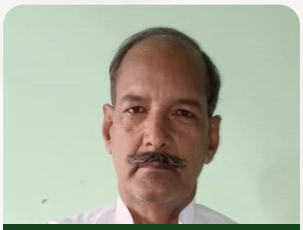

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

कंगनी (फॉक्सटेल मिलेट) की खेती: जलवायु, मिट्टी, और उपज बढ़ाने के टिप्स

कंगनी, जिसे अंग्रेजी में फॉक्सटेल मिलेट (Foxtail Millet) कहा जाता है, एक महत्वपूर्ण मोटा अनाज है जिसे भारत में बहुतायत में उगाया जाता है। यह सूखे और कम उपजाऊ भूमि में भी अच्छी तरह से उगता है। फॉक्सटेल मिलेट की खेती दुनिया में सबसे पुराने मोटे अनाजों की खेती मानी जाती है। एशिया, अफ्रीका और अमेरिका के लगभग 23 देशों में इसकी खेती की जाती है। यह एक स्व–परागण, सी 4 और छोटी अवधि की फसल है। ये अनाज, मानव उपभोग के लिए भोजन के रूप में अच्छा माना जाता है, कुक्कुट और पिंजरे के पक्षियों के लिए दाने के रूप में इसका प्रयोग किया जाता है, फॉक्सटेल मिलेट दुनिया में मोटे अनाज उत्पादन में दूसरे स्थान पर है।

भारत में, मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना, राजस्थान, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश और कुछ हद तक भारत के पूर्वोत्तर राज्य में इसकी खेती की जाती है। इसका उपयोग गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए, एक ऊर्जा के रूप में किया जाता है और बीमार लोग और बच्चे के लिए भी ये काफी पोषण युक्त है। आज के इस लेख में हम आपको इसकी खेती से सम्बंधित सम्पूर्ण जानकरी देंगे।

कंगनी की खेती के लिए जलवायु और मिट्टी

कंगनी गर्म और शुष्क जलवायु में अच्छी तरह से उगती है। यह फसल 20–30°C तापमान में सबसे अच्छी होती है। यह सूखा सहिष्णु फसल है और इसे कम बारिश वाले क्षेत्रों में भी उगाया जा सकता है। कंगनी की फसल मध्यम भूमि में अच्छी उपज देती है। हालांकि, अच्छी पैदावार के लिए उपजाऊ अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी अच्छी मानी जाती है। यह फसल रेतीली से भारी मिट्टी और चिकनी मिट्टी पर भी अच्छी उपज देती है। इसकी फसल 500–700 मि.मी. वार्षिक वर्षा वाली जगह में बेहतर उपज देती है। कंगनी की फसल जल भराव को सहन नहीं कर सकती और ज्याद सूखा होने पर भी फसल को नुकसान होता है।

बुवाई का समय और बुवाई का तरीका

इसकी फसल जुलाई से अगस्त तक खरीफ के समय में बोई जाती है। यह मुख्य रूप से जून से जुलाई तक कर्नाटक में बोया जाता है। इसकी खेती जुलाई में तमिलनाडु, तेलंगाना और में होती है, और महाराष्ट्र में जुलाई के दूसरा–तीसरा सप्ताह में होती है। बुवाई – सीधी बुवाई या पंक्तियों में की जा सकती है। पंक्तियों में बुवाई के लिए, पंक्तियों के बीच 25–30 से.मी. की दूरी रखें और पौधों के बीच 10–15 से.मी. की दूरी रखें।

खाद और उर्वरक प्रबंधन

जुताई से पहले खेत में अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट मिलाएं। उर्वरक नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश (NPK) का संतुलित मात्रा में प्रयोग करें। 20–30 किग्रा नाइट्रोजन, 15–20 किग्रा फॉस्फोरस, और 10–15 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। नाइट्रोजन को दो भागों में विभाजित करें: पहला भाग बुवाई के समय और दूसरा भाग बुवाई के 30–35 दिनों बाद दें।

निराई और गुड़ाई

लाइन विधि से बुवाई की गई फसल में दो बार खरपतवार नियंत्रण के लिए हल या हैरो की मदद से निराई और गुड़ाई की जा सकती है और बाद में हाथ से निराई खरपतवार नियंत्रण में असरदार है। इंटरकल्चरल ऑपरेशन में फसल 30 दिन पुरानी होने पर टाइन–हैरो का प्रयोग करना है। हाथ से छिड़क कर बुवाई की गयी फसल में पहली निराई–गुड़ाई अंकुर निकलने के 15–20 दिन बाद करे और दूसरी गोडाई 15–20 दिन बाद की जाती है।

सिंचाई प्रबंधन

खरीफ सीजन की फसल के लिए नहीं या न्यूनतम सिंचाई की आवश्यकता होती है। ये फसल ज्यादातर वर्षा आधारित फसल के रूप में उगाया जाता है। हालांकि, अगर लंबी अवधि तक शुष्क दौर बना रहता है, फिर 1–2 सिंचाइयां देनी चाहिए। ग्रीष्मकालीन फसल के लिए 2–5 सिंचाइयों की आवश्यकता होती है।

फसल की कटाई और उपज

फसल कटाई के लिए तैयार होती है जब पौधों की पत्तियाँ सूख जाती हैं और दाने कठोर हो जाते हैं। कटाई के बाद फसल को धूप में सुखाकर दाने निकालें। कंगनी की उपज भूमि की उर्वरता, जलवायु, और फसल प्रबंधन पर निर्भर करती है। औसतन 1.5 से 2.5 टन प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होती है।

मक्का की खेती: उच्च उपज और लाभ के लिए बुवाई की आधुनिक विधियाँ

मक्का की खेती भारत में खरीफ के मौसम में बड़े पैमाने पर की जाती है। विविध कृषि–जलवायु परिस्थितियाँ विश्व स्तर पर मक्का को अनाज की रानी के रूप में जाना जाता है, क्योंकि इसमें अनाजों में उच्चतम आनुवंशिक उपज क्षमता होती है। मक्के की खेती देश के सभी राज्यों में विभिन्न उद्देश्यों के लिए साल भर की जाती है। मक्का की खेती मुख्य रूप से अनाज, चारा, ग्रीन कॉब्स, स्वीट कॉर्न, बेबी कॉर्न, पॉप कॉर्न सहित अन्य उद्देश्य से की जाती है। मक्का गर्म और आर्द्र जलवायु में अच्छी तरह से उगती है। 21–30 डिग्री सेल्सियस तापमान इसके लिए आदर्श होता है। बुवाई के समय अच्छे मौसम और बाद में पर्याप्त वर्षा की आवश्यकता होती है। मक्का के लिए दोमट मिट्टी सबसे अच्छी मानी जाती है, लेकिन यह बलुई, दोमट और चिकनी मिट्टी में भी उगाई जा सकती है। मक्का की बुवाई का समय क्षेत्र और मौसम पर निर्भर करता है। खरीफ की फसल के लिए जून–जुलाई और रबी की फसल के लिए अक्टूबर–नवंबर सबसे उपयुक्त समय हैं। मक्का की खेती के लिए 20–25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है। मक्का की बुवाई विभिन्न विधियों से की जाती है, इन विधियों के बारे में आप इस लेख में जानेंगे।

जुताई और फसल की बुवाई

इष्टतम पौधे स्टैंड को प्राप्त करने के लिए जुताई और फसल की समय पर बुवाई महत्वपूर्ण है जो की फसल की उपज बीज, अंकुर की परस्पर क्रिया गहराई, मिट्टी की नमी, बुवाई की विधि, मशीनरी आदि पर निर्भर करती है लेकिन रोपण की विधि एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

उच्च उपज प्राप्त करने के लिए विभिन्न बुवाई विधियों की जानकारी

नई बुवाई की प्रौद्योगिकियां (आरसीटी) जिसमें कई प्रथाएं शामिल हैं। शून्य जुताई, न्यूनतम जुताई, सतह विभिन्न मक्का आधारित फसल प्रणाली में बीजारोपण आदि प्रचलन में है। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि विभिन्न स्थितियों की आवश्यकता के अनुसार ही फसल की बुवाई की जानी जरूरी है।

उठी हुई क्यारी (मेड़) रोपण विधि

ये विधि आज कल बहुत प्रचलन में है, किसानों के बीच आमतौर पर उठी हुई क्यारी रोपण को सबसे अच्छा माना जाता है। अधिक नमी के तहत मानसून और सर्दियों के मौसम के दौरान मक्का के लिए इस रोपण विधि को सबसे अच्छा माना जाता है। ये विधि अच्छी फसल स्टैंड प्राप्त करने में मदद करती है, उच्च उत्पादकता और संसाधन उपयोग दक्षता में भी कारीगर है। उन्नत क्यारी रोपण प्रौद्योगिकी, 20–30% सिंचाई करके उच्च उत्पादकता से जल की बचत की जा सकती है। इस विधि से फसल की अधिक उपज प्राप्त होती है।

जीरो टिल बुवाई विधि

इस बुवाई की विधि से मक्का की खेती से अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है। इस विधि में पहली फसल की कटाई के बाद जुताई की स्थिति में बिना किसी प्राथमिक जुताई के मक्का की फसल को उगाया जाता है। खेती की कम लागत, उच्च कृषि लाभप्रदता के साथ और बेहतर संसाधन उपयोग दक्षता के लिए इस विधि का प्रयोग किया जाता है। ऐसी स्थिति में बुवाई के समय मिट्टी में अच्छी नमी सुनिश्चित करनी चाहिए। बीज और उर्वरकों को जीरो टिल का उपयोग करके बैंड में बोया जाना चाहिए। इसके लिए जीरो टिलेज मशीन का भी इस्तेमाल किया जाता है।

मक्का की पारंपरिक फ्लैट प्लांटिंग तकनीक

भारी खरपतवार संक्रमण के तहत जहां रासायनिक/शाकनाशी खरपतवार प्रबंधन नो–टिल और बारानी क्षेत्रों के लिए भी असंवैधानिक है। जहां फसल का जीवित रहना संरक्षित मिट्टी की नमी पर निर्भर करता है, ऐसी स्थितियों में समतल बुआई की जा सकती है। इस विधि में बीज – सह – उर्वरक प्लांटर्स का उपयोग करके किया जाना चाहिए। इन बुवाई के तरीकों को अपना कर आप अधिक उपज प्राप्त कर सकते है जिससे की आपको मुनाफा होगा। अगर आपके पास मक्का की खेती से संबंधित कोई और प्रश्न हैं, तो आप हमसे संपर्क कर सकते हैं।

कपास की फसल में इंटरकल्चरल ऑपरेशंस करने से होने वाले फायदे

कपास की फसल में अंतर–खेती कार्य (Intercultural Operations) का उचित प्रबंधन, फसल की पैदावार और गुणवत्ता को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कपास की फसल में इंटरकल्चरल ऑपरेशंस, जिसमें रोपण और कटाई के बीच किए गए प्रबंधन अभ्यास शामिल हैं, इन कार्यों में खरपतवार नियंत्रण, मिट्टी की तैयारी, सिंचाई, उर्वरक प्रबंधन, कीट नियंत्रण, रोग नियंत्रण और कटाई शामिल हैं।

उपज में वृद्धि

निराई, छंटाई और विरलन जैसे इंटरकल्चरल ऑपरेशन, कपास के पौधों के बीच पानी, पोषक तत्वों और धूप जैसे संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा को कम करने में मदद कर सकते हैं। इससे बेहतर वृद्धि हो सकती है, कपास के बोल विकास में वृद्धि हो सकती है, और अंततः प्रति इकाई क्षेत्र में उच्च उपज हो सकती है।

खरपतवार नियंत्रण

- संसाधनों के लिए कपास के पौधों के साथ प्रतिस्पर्धा करने वाले खरपतवारों को नियंत्रित करने में इंटरकल्च. रल ऑपरेशन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- खरपतवार फसल के पोषक तत्वों, पानी और धूप के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं, जिससे पैदावार कम होती है।
- मैनुअल निराई, गुड़ाई, या शाकनाशी अनुप्रयोग जैसी प्रथाओं के माध्यम से खरपतवारों को हटाने या दबाने से, इंटरकल्चरल ऑपरेशन कपास के विकास के लिए अनुकूल वातावरण बनाए रखने में मदद करते हैं, जिससे खरपतवार के कारण होने वाली उपज हानि कम हो जाती है।
- हस्तनिर्मूलन सबसे आसान और किफायती तरीका है, लेकिन यह समय लेने वाला है।
- रसायनिक विधि में शामक और चुनिंदा हर्बिसाइड का उपयोग किया जाता है।
- यांत्रिक विधि में कपास की रोपाई के बाद कपास रोपाई और कपास की निराई के लिए कपास निराई का उपयोग किया जाता है।

रोग और कीट प्रबंधन

इंटरकल्चरल ऑपरेशन कपास की फसलों को प्रभावित करने वाले रोगों और कीटों के प्रबंधन में योगदान कर सकते हैं। उचित अंतराल और छंटाई जैसे अभ्यास वायु प्रवाह और सूर्य के प्रकाश के प्रवेश की सुविधा प्रदान करते हैं, जो आर्द्रता को कम कर सकते हैं और कवक रोगों के विकास और प्रसार को रोक सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, संक्रमित पौधे के हिस्सों को समय पर हटाने से कीटों और बीमारियों के प्रसार को रोकने में मदद मिल सकती है। कीट नियंत्रण के लिए एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) रणनीति का उपयोग किया जाना चाहिए। आईपीएम में नैसर्गिक नियंत्रण विधियों, जैविक कीटनाशकों और रासायनिक कीटनाशकों का संयोजन शामिल है।

पोषक तत्वों का अनुकूलन

- उर्वरक अनुप्रयोग और मिट्टी प्रबंधन जैसे इंटरकल्च. रल संचालन के माध्यम से, कपास उत्पादक पौधों द्वारा पोषक तत्वों की उपलब्धता और ग्रहण को अनुकूलित कर सकते हैं।
- मिट्टी के पोषक तत्वों के स्तर की निगरानी और उसके अनुसार उर्वरकों को लगाने से, इंटरकल्चरल ऑपरेशन यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि कपास के पौधों को स्वस्थ विकास और विकास के लिए आवश्यक पोषक तत्व प्राप्त हों।
- कपास की फसल को नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटेशियम सहित संतुलित उर्वरक की आवश्यकता होती है।
- उर्वरक की मात्रा और समय मिट्टी की उर्वरता, फसल की किस्म और मौसम की स्थिति पर निर्भर करती है।
- आधार उर्वरक, बुवाई के समय और शीर्ष ड्रेसिंग, बढ़वार और फलन के चरणों में लगाया जाता है।

जल प्रबंधन

- कपास की फसल के लिए कुशल जल प्रबंधन महत्वपूर्ण है, खासकर सीमित जल संसाधनों वाले क्षेत्रों में।
- मल्चिंग और सटीक सिंचाई तकनीक जैसे इंटर. कल्चरल ऑपरेशन मिट्टी में बेहतर जल प्रतिधारण, वाष्पीकरण को कम करने और जल–उपयोग दक्षता में सुधार करने में सक्षम बनाते हैं।
- यह पानी के संरक्षण, सिंचाई की लागत को कम करने और टिकाऊ कपास की खेती को बढ़ावा देने में मदद करता है।
- कपास की फसल को नियमित सिंचाई की आवश्यकता होती है, खासकर बढ़वार और फलन के चरणों में।
- अति सिंचाई से जड़ सड़न और फंगल रोग हो सकते हैं।
- ड्रिप इरिगेशन सबसे कुशल और पानी बचाने वाली विधि है।
- ढलान सिंचाई और फव्वारा सिंचाई का उपयोग भी किया जा सकता है।

फसल की गुणवत्ता में वृद्धि

इंटरकल्चरल ऑपरेशंस कपास की गुणवत्ता में सुधार करने में योगदान कर सकते हैं। विकास के वातावरण का प्रबंधन करके, खरपतवारों को नियंत्रित करके, और कीटों और बीमा. रियों को दूर करके, कपास के पौधे कम संदूषण या क्षति के साथ स्वच्छ, स्वस्थ बॉल्स का उत्पादन कर सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप उच्च गुणवत्ता वाले फाइबर, बेहतर विपणन क्षमता और कपास उत्पादकों के लिए लाभप्रदता में वृद्धि हो सकती है।

सौंफ की खेती: जलवायु, मिट्टी, बुवाई, और उन्नत किस्में के साथ उच्च उपज के लिए सम्पूर्ण मार्गदर्शन

सौंफ (Foeniculum vulgare) एक प्रमुख मसाला फसल है जिसे भारतीय उपमहाद्वीप में व्यापक रूप से उगाया जाता है। इसका उपयोग मुख्य रूप से भोजन में स्वाद बढ़ाने और औषधीय गुणों के लिए किया जाता है। सौंफ के बीजों से तेल भी निकाला जाता है, इसकी खेती मुख्य रूप से गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, आँध्रप्रदेश, पंजाब तथा हरियाणा में की जाती है। इस लेख में हम सौंफ की खेती के बारे में सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

सौंफ की खेती के लिए जलवायु और मिट्टी की आवश्यकता

सौंफ की खेती के लिए समशीतोष्ण जलवायु उपयुक्त होती है। यह ठंडे और शुष्क जलवायु में बेहतर होती है। अधिक आर्द्रता या अत्यधिक गर्मी से फसल को नुकसान हो सकता है। सौंफ के लिए दोमट या बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है। मिट्टी का पीएच स्तर 6.0 से 7.0 के बीच होना चाहिए। जल निकासी की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए क्योंकि जलजमाव से फसल को नुकसान हो सकता है। इसकी खेती के लिए भूमि को अच्छे से तैयार करना बहुत आवश्यक होता है।

भूमि की तैयारी

खेत की गहरी जुताई करें ताकि मिट्टी भुरभुरी और अच्छी तरह से हवादार हो जाए।

खाद: गोबर की खाद या वर्मी कम्पोस्ट मिलाकर मिट्टी की उर्वरता बढ़ाएं। नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश की उचित मात्रा का उपयोग करें।

बुवाई का समय

समयरू सौंफ की बुवाई का उपयुक्त समय अक्टूबर से नवंबर तक होता है।

बीज: उच्च गुणवत्ता वाले, प्रमाणित बीजों का चयन करें।

सौंफ की उन्नत किस्मे कौन सी है?

सौंफ की अच्छी उपज पाने के लिए उन्नत किस्मों का ही इस्तेमाल करे जिससे की उत्पादन अधिक हो और आप अधिक मुनाफा कमा सकें, इसकी प्रमुख किस्मे है – कि सी.ओ.1, गुजरात फनेल 1, आर.ऍफ 35, आर.ऍफ101, आर.ऍफ125, एन पी.डी. 32 एवं एन पी.डी.186, एन पी.टी.163, एन पी. के.1, एन पी.जे.26, एन पी.जे.269 एवं एन पी.जे131, पी.ऍफ 35, उदयपुर ऍफ 31, उदयपुर ऍफ 32, एम. एस.1 तथा जी.ऍफ.1 आदि है।

बुवाई के लिए बीज और बुवाई का तरीका

सौंफ की फसल उत्पादन के लिए खेत की तैयारी के बाद बीज की आवश्यकता होती है। बुवाई के समय बीज दर लगभग 8–10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बीज की बुवाई करें। बीजों को फफूंदनाशक से उपचारित करें ताकि रोगों से बचाव हो सके। बीजों को 2–3 सेंटीमीटर गहराई पर बोएं। कतारों के बीच 45–60 सेंटीमीटर और पौधों के बीच 10–15 सेंटीमीटर की दूरी रखें।

फसल में सिंचाई प्रबंधन

सौंफ की फसल में बुवाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करें। 10–15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करें। फसल में सिंचाई का फूल आने के समय और बीज बनने के समय विशेष ध्यान दें।

फसल में उर्वरक प्रबंधन

नाइट्रोजन 30–40 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की दर से दें। आधी मात्रा बुवाई के समय और आधी मात्रा पहली निराई के समय दें।फॉस्फोरस और पोटाश बुवाई के समय 25–30 किलोग्राम फॉस्फोरस और 20–25 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से दें।

फसल में खरपतवार नियंत्रण

पहली सिंचाई के बाद निराई–गुड़ाई करना आवश्यक रहता है तथा 45 से 50 दिन बाद दूसरी निराई गुड़ाई करना आवश्यक होता हैप बड़ी फसल होने पर निराई–गुड़ाई करते समय पौधे टूटने का भय रहता है।

सौंफ की कटाई और पैदावार

फसल की कटाई तब करनी चाहिए जब फसल का बीज अच्छे से पाक के तैयार हो जाए, फसल की कटाई तब करें जब बीज पूरी तरह से पके और सूखने लगे। आमतौर पर यह समय मार्च से अप्रैल के बीच होता है। कटाई की विधि पौधों को काटकर उनकी मंड़ाई करें और बीजों को सुखाएं। सौंफ की उपज लगभग 12–15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

IPL™ Biologicals

रोपाई के तुरंत बाद, धान के लिए

ताकतवर 4 उत्पाद

कोरोमंडल इंटरनेशनल ने लांच किए 10 नए उत्पाद

कृषि–रसायन फर्म कोरोमंडल इंटरनेशनल ने शुक्रवार को फसल की पैदावार बढ़ाने और कीटों और बीमारियों से फसल की रक्षा के लिए पेटेंट सहित 10 नए उत्पाद पेश किए। इनमे तीन पेटेंट शामिल हैं, जिनका उद्देश्य फसल की पैदावार बढ़ाना, कीटों के संक्रमण को नियंत्रित करना और टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना है। कंपनी ने एक बयान में कहा कि नए उत्पादों में एक अभिनव नीम–लेपित जैव संयंत्र और मृदा स्वास्थ्य प्रमोटर और पांच सामान्य फॉर्मूलेशन शामिल हैं, जो भारतीय किसानों के लिए व्यापक फसल सुरक्षा समाधान पेश करते हैं।

धान सहित कई फसलों के कीटों और रोगों से मिलेगा छुटकारा

पेटेंट उत्पादों में से एक प्रमुख उत्पाद है इसका नाम प्रचंड है, इसने ISK – इशिहारा सांग्यो कैशा, लिमिटेड जापान के साथ साझेदारी की है। कोरोमंडल का कहना है कि यह उत्पाद धान की फसल को तना छेदक और पत्ती मोड़ने वाले कीटों जैसे विनाशकारी कीटों से बचाने के लिए उन्नत जापानी तकनीक का उपयोग करके तैयार किए गए है, जिससे किसानों की उपज में 70ः तक की संभावित हानि कम हो जाती है। इसने फॉल आर्मीवर्म से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए एक फॉर्मूलेशन भी विकसित किया है, जो एक अत्यधिक विनाशकारी कीट है जो भारत में सालाना 30 प्रतिशत मकई की फसल को नुकसान पहुंचाता है। दो नए पेटेंट कवकनाशी का उद्देश्य फसल के स्वास्थ्य और पैदावार में सुधार करना है – एक चावल में शीथ ब्लाइट रोग पर लंबे समय तक चलने वाला नियंत्रण प्रदान करता है, जबकि दूसरा आलू, अंगूर और टमाटर में बीमारियों के खिलाफ सतही और प्रणालीगत कार्रवाई प्रदान करता है। अन्य नए उत्पादों में एक अभिनव नीम लेपित जैव संयंत्र और मृदा स्वास्थ्य प्रमोटर और तीन जड़ी–बूटियों सहित पांच सामान्य फॉर्मूलेशन शामिल हैं, जो उच्च प्रभाव वाले व्यापक फसल सुरक्षा समाधान प्रदान करते हैं। कोरोमंडल इंटरनेशनल व्यवसाय पिछले कुछ वर्षों में अपने उत्पाद पोर्टफोलियो को मजबूत कर रहा है और 2023–24 में नए उत्पादों की बिक्री में हिस्सेदारी 15ः रही। कंपनी ने एक विज्ञप्ति में कहा कि नवीनतम जुड़ाव से उत्पाद की पेशकश और समृद्ध होगी।

जैविक खाद तैयार करने की प्रमुख विधियों के बारे में जाने यहां

रासायनिक खेती की तुलना में जैविक खेती बराबर या अधिक उत्पादन देती है, इसलिए कृषकों की उत्पादकता और मृदा की उर्वरता दोनों में जैविक खेती बहुत प्रभावी है। जैविक खेती वर्षा आधारित क्षेत्रों में और भी अधिक लाभदायक है। जैविक खेती से उत्पादन की लागत कम होती है और कृषक भाइयों को अधिक आय मिलती है।

जैविक खाद तैयार करने की प्रमुख विधियाँ

1. बायोगैस स्लरी बनाने की विधि

अबायोगैस संयंत्र में गोबर गैस की पाचन प्रक्रिया में 25 प्रतिशत ठोस पदार्थ गैस में बदल जाता है और 75 प्रतिशत ठोस पदार्थ खाद में बदल जाता है। जो बायोगैस स्लरी कहलाता है, एक वर्ष में दो घनमीटर के बायोगैस संयंत्र में 50 किलोग्राम प्रतिदिन या 18.25 टन गोबर डाला जाता है। उस गोबर से लगभग दस टन बायोगैस स्लेरी का खाद मिलता है, जो 80 प्रतिशत नमी से भरपूर है। ये खेती के लिए बेहतरीन खाद है। इसमें 1.5 से 2 प्रतिशत नाइट्रोजन, 1 प्रतिशत सल्फर और 1 प्रतिशत पोटाश होता है। मोनियम नाइट्रेट, बायोगैस संयंत्र में गोबर गैस की पाचन क्रिया के बाद 20 प्रतिशत नाइट्रोजन बनता है। खेत में सिंचाई नाली का तुरंत उपयोग रासायनिक खाद की तरह फसल पर तुरंत लाभ देता है और उत्पादन को 10 – 20 प्रतिशत बढ़ाता है। स्लरी खाद में नाइट्रोजन, सल्फर, पोटाश और सूक्ष्म पोषण तत्वों के अलावा ह्यूमस भी होता है, जो मिट्टी की संरचना को सुधारता है और इसकी जल धारण क्षमता को बढ़ाता है। सिंचित खेती में 10 टन सूखी खाद की आवश्यकता होगी, जबकि असिंचित खेती में 5 टन की आवश्यकता होगी। ताजी गोबर गैस स्लरी की सिंचित खेती में 3–4 टन प्रति हैक्टर की आवश्यकता होगी। अन्तिम बखरनी के दौरान सूखी खाद और सिंचाई के दौरान ताजी स्लरी का उपयोग करें। स्लरी का उपयोग करने से फसलों को तीन वर्ष तक धीरे–धीरे पोषक तत्व मिलते रहते हैं।

2. वर्मी कम्पोस्ट

केंचुआ को भूमि की आंत और कृषकों का दोस्त कहा जाता है। यह सेंद्रिय पदार्थ मिट्टी और ह्यूमस को एकत्र करके जमीन की अन्य परतों में फैलता है। इससे जमीन पोली होती है, हवा का प्रवेश बढ़ता है और जलधारण क्षमता बढ़ती है। रसायनिक और सूक्ष्म जीवाणुओं की क्रिया केंचुओं के पेट में होती है, जिससे नत्रजन, स्फुर और पोटाश सहित अन्य सूक्ष्म तत्वों की उपलब्धता बढ़ जाती है। वर्मी कम्पोस्ट में बदबू नहीं होती, मच्छर और मक्खी नहीं बढ़ते, और वातावरण को प्रदूषित नहीं करता।तापमान नियंत्रित रहने से जीवाणु जीवित रहते हैं। वर्मी कम्पोस्ट लगभग डेढ़ से दो महीने में तैयार हो जाता है। इसमें 2.5 से 3% नाइट्रोजन, 1.5 से 2% सल्फर तथा 1.5 से 2% पोटाश पाया जाता है।

वर्मी कम्पोस्ट बनने की विधि

कचरे से खाद तैयार किया जाना है उसमें से कांच–पत्थर, धातु के टुकड़े अच्छी तरह अलग कर इसके पश्चात वर्मी कम्पोस्ट तैयार करने के लिये 10 x 4 फीट का प्लेटफार्म जमीन से 6 से 12 इंच तक ऊंचा तैयार किया जाता है। इस प्लेटफार्म पर छाया के लिए झोपड़ी और दो रद्दे ईट लगाए, प्लेटफार्म पर सूखा चारा, तीन से सात क्विंटल गोबर की खाद और सात से आठ क्विंटल कूड़ाकरकट (गार्वेज) बिछाकर झोपड़ीनुमा आकार देकर अधपका खाद बनाया जाता है। दस से पंद्रह दिन तक झारे से सिंचाई करने से खाद का तापमान कम होता है। 100 वर्ग फीट में 10,000 केंचुए छोड़े जाते हैं। केचुए छोड़ने के बाद, टांके को जूट के बोरे से ढंक दिया जाता है और चार दिन तक झारे से सिंचाई की जाती है ताकि 45 – 50% नमी बनी रहे। ध्यान रखें कि अधिक गीलापन हवा को बंद कर देगा, जिससे सूक्ष्म जीवाणु तथा केचुए मर जाएंगे या काम नहीं कर पाएंगे।

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives

इफको नैनो यूरिया (तरल)

के साथ आया

इफको नैनो डीएपी (तरल)

बेहतर फसल और अधिक लाभ पाना हुआ अब और भी सरल

पपीते की खेती: उन्नत किस्में, पौध तैयार करना और अधिक मुनाफा कैसे कमाएँ?

पपीता शीघ्र तैयार होने वाला लाभदायक फल है। इसमें कई पोषक तत्व भी पाए जाते है। इसकी खेती अब व्यवसायिक रूप से की जाती है, हालांकि यह सिर्फ शीतकटिबन्धीय क्षेत्रों में की जाती है। यह स्वास्थ्य में बहुत फायदेमंद है इसमें पपेन और पैक्टिन हैं। पपेन एक औषधि है, पपेन पपीते के कच्चे फलों से निकाला जाता है। पपीते की खेती के बारे में अधिक जानकारी के लिए इस लेख को अंत तक पढ़ें।

पपीते की उन्नतशील किस्में

अच्छी उपज पाने के लिए किस्मों का अहम योगदान होता है इसलिए उन्नत किस्मों का ही चुनाव करना चाहिए। पूसा डेलीसस 1–15, पूसा मैजिस्टी 22–3, पूसा जायंट 1–45–वी, पूसा ड्वार्फ 1–45–डी, पूसा नन्हा या म्युटेंट डुवार्फ, सी०ओ०–1, सी०ओ०–2, सी०ओ०–3, सी०ओ०–4, कुर्ग हनी, एवम हनीडीयू जैसी उन्नतशील प्रजातियाँ उपलब्ध है।

पपीते की खेती में पौधों को कैसे तैयार किया जाता है?

पपीते की खेती में पौधों को तैयार करने के लिए पहले पौधों को 10 सेमी ऊँची, 3 मीटर लम्बी और 1 मीटर चौड़ी क्यारी में या गमले या पालीथीन बैग में तैयार करते हैं। बीज बोने से पहले क्यारी को 10: फार्मेलड़ीहाईड घोल से ढक देते हैं। फिर बीज को 1 से.मी. गहरे और 10 से.मी. की दूरी पर बोते हैं। 60 दिन बाद इन पौधों को रोपना चाहिए, जब वे 15 से 25 से.मी. ऊँचे हो जाएँ।

पपीता के पौधों का रोपण किस मौसम में किया जाता है?

भारत में पपीता की तीन मौसम में रोपाई की जाती है तथा पौध उसी तरह से 60 दिन पहले तैयार की जाती है सबसे पहले जून एवम जुलाई में, इसके बाद सितम्बर–अक्टूबर में तथा अंत में फरवरी एवं मार्च में रोपण किया जाता है।

दक्षिण भारत मे साधारणत् फरवरी–मार्च में रोपाई की जाती है, खेत में पौधों की रोपाई दोपहर बाद 3 बजे से करनी चाहिए। रोपाई के बाद पानी लगाना अतिआवश्यक है तैयार किए गए गढ़ढ़ो में प्रत्येक गढढ़ो में 2 या 3 पौधे थोड़ी थोड़ी दूरी पर लगाना चाहिए। जब तक अच्छी तरह से पौधे स्थापित न हो जाये तब तक प्रतिदिन 3 बजे सायं के बाद हल्की सिचाई करनी चाहिए, फूल आने पर 10% नर पौधे को छोड़ कर सभी नर पौधे को काट कर अलग कर देना चाहिए।

पपीते के पौधों में पोषण प्रबंधन

पपीता एक शीघ्र बढने एवं फल देने वाला पौधा है जिसके कारण आधिक तत्व की आवश्यकता पड़ती है। अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए 250 ग्राम नाइट्रोजन 150 ग्राम फास्फोरस तथा 250 ग्राम पोटाश प्रति पौधा के हिसाब से प्रति वर्ष देना चाहिए यह मात्रा पौधे के चारो ओर 2 से 4 बार में थोड़े–थोड़े समय के अन्तराल पर देनी चाहिए। पपीते पर मिट्टी चढाना अति आवश्यक है। प्रत्येक गढ्ढे में एक पौधे को रखने के बाद पौधे ḍh जड़ के आस पास 30 से.मी. की गोलाई में मिट्टी को ऊँचा चढ़ा देते है ताकि पेड़ के पास सिचाई का पानी आधिक न लग सके तथा पौधे सीधा खड़ा रखते है।

फसल में जल प्रबंधन

वर्षा ऋतू में वर्षा न होने पर पपीते को आवश्यकतानुसार सिचाना चाहिए, गर्मियों में 6 से 7 दिन और सर्दियों में 10–12 दिन के अंतराल पर सिचाना चाहिए, सिंचाई का पानी पौधे के सीधे संपर्क में नहीं आना चाहिए। खेत की लगातार सिंचाई से मिट्टी बहुत कड़ी हो जाती है, जिससे पौधों की वृद्धि प्रभावित होती है। हर दो या तीन सिचाई के बाद खेत में हल्की निराई करनी चाहिए, ताकि हवा और पानी का अच्छा संचार हो सके।

फलों की तुड़ाई और पैदावार

फल को चिड़ियों से बचाना बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए उन्हें पकने से पहले ही तोड़ देना चाहिए, जब फल की ऊपरी सतह पर खरोच कर दूध या पानी की तरह तरल पदार्थ निकलने लगे और उनका रंग बदलने लगे, तो फल पक गया है और तोड़ देना चाहिए। फल को सुरक्षित तोड़ने के बाद, उन्हें कागज या अखबार आदि से लपेटकर प्रत्येक फल को लकड़ी या गत्ते के बाक्स में अलग–अलग बिछाकर रखना चाहिए। फिर बाक्स को बंद करके बाजार में भेजना चाहिए, ताकि फल खराब न हो और अच्छे भाव मिल सके। पैदावार उचित देखभाल, जलवायु और मिट्टी की किस्म पर निर्भर करती है समुचित व्यवस्था पर प्रत्येक पेड़ एक मौसम में 35 से 50 कि. फल और 15 से 20 टन उपज प्रति हेक्टर देता है।

लीची की इन किस्मों को उगाकर आप भी कमा सकते है अच्छा मुनाफा

लीची का फल रसीला और बहुत फायदेमंद होता है। यह विटा. मिन बी के साथ–साथ विटामिन सी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। यह दक्षिणी चीन में खोजा गया था। भारत की पैदावार विश्व में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है। भारत में इसकी खेती केवल जम्मू कश्मीर, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में की जाती है, लेकिन बढ़ती मांग के कारण बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, पंजाब, हरियाणा, उत्तरांचल, आसाम, त्रिपुरा और पश्चिमी बंगाल में भी की जाती है। इसकी खेती करके किसान अच्छा मुनाफा कमा सकते है। यहाँ हम आपको लीची की ऐसी पांच किस्मो के बारे में जानकारी देंगे जिनकी खेती करके आप अच्छा मुनाफा कमा सकते है।

1. शाही लीची

बिहार की शाही लीची मुजफ्फरपुर में उत्पादित होती है, जो देश में सबसे लोकप्रिय लीची में से एक है। देश के अन्य हिस्सों में भी किसान इस नाम से खेती करते हैं, लेकिन मुजफ्फरपुर शाही लीची अच्छी है। इसकी लीची की गुणवत्ता इसे GI टैग भी देती है।

2. कलकत्ता (Syn- Kalkattia)

भारत के उत्तरी भागों में उगाई जाने वाली सभी किस्मों में से सर्वोत्तम है। गर्म क्षेत्रों में भी इसकी खेती की जाती है, बशर्ते कि तेज गर्म हवाओं से सुरक्षा और प्रावधान हो साथ ही सिंचाई के लिए भरपूर पानी हो। लीची की औसत उपज 80–100 किलोग्राम / पेड़ है। यह देर से आने वाली किस्म और फल देने वाली किस्म है और ये जून के अंतिम सप्ताह में पक जाती है। इस किस्म के पेड़ों की औसत ऊंचाई 4 मीटर और फैलाव 6 मीटर होता है। फल आकार में बड़े, आयताकार, परिपक्व होने पर टायरियन गुलाबी रंग और गहरे ट्यूबरकल वाले होते हैं।

3. लेट सीडलेस (सं. लेट बेदाना)

यह किस्म पूरी तरह से बीज रहित नहीं है, बल्कि सिकुड़ी हुई और आकार में छोटी है। इसकी खेती गर्म क्षेत्रों में भी सफलतापूर्वक की जाती है, बशर्ते कि तेज गर्म हवाओं से सुरक्षा हो सिंचाई के लिए भरपूर पानी की व्यवस्था हो, इस किस्म के पेड़ बहुत ताकतवर और ऊर्जावान होते हैं औसत ऊंचाई 5.5 मीटर और फैलाव 7.0 मीटर। यह देर से आने वाली किस्म है और फल आमतौर पर तीसरे सीजन में पकते हैं। इस किस्म की औसत उपज 80–100 कि.ग्रा.ध्वृक्ष है। फल मध्यम से बड़े आकार के, शंक्वाकार आकार के होते हैं। परिपक्वता पर रंग गहरे काले भूरे रंग के ट्यूबरकल के साथ गहरे लाल रंग का हो जाता है। गूदा मलाईदार–सफेद, मुलायम, टी.एस.एस. के साथ रसदार 20% कुल मिलाकर गुणवत्ता बहुत अच्छी है।

4. गुलाबी

यह उत्तर भारत में टेबल उद्देश्य के लिए खेती की जाने वाली एक और महत्वपूर्ण किस्म है। यह देर से पकने वाली किस्म है और इसके फल जून के चौथे सप्ताह में पक जाते हैं। यह प्रचुर मात्रा में और नियमित रूप से 90–100 किलोग्राम फलध्पेड़ देता है। पेड़ 6.0 मीटर की ऊंचाई और 7.0 मीटर का होता है। फल मध्यम आकार के, आयताकार–अंडाकार दिल के आकार के होते हैं। परिपक्वता के समय फल लाल से कैरमाइन लाल पृष्ठभूमि पर मंदारिन लाल ट्यूबरकल दिखाई देते हैं।

5. गुलाब की सुगंध

बिहार के मुजफ्फरपुर क्षेत्र में टेबल उद्देश्य के लिए इसकी व्यावसायिक खेती की जाती है। लीची की ये किस्म उच्च फल गुणवत्ता के अलावा गुलाब की विशिष्ट सुगंध के लिए प्रसिद्ध है और इसलिए इसे गुलाब सुगंधित कहा जाता है। यह मध्य–मौसम में शुरू होने वाली किस्म है और जून के प्रथम सप्ताह में पक जाती है। औसत उपज लगभग 80–90 किग्राध्पेड़ है। फल मध्यम से बड़े होते हैं। आकार अधिकतर अंडाकार या दिल के आकार का और गहरे गुलाबी गुलाबी रंग का होता है। गूदा हल्का भूरा सफेद मुलायम और टी.एस.एस. 20% होता है।

अरबी के पत्तों से कमाएं 2 लाख रुपये प्रति एकड़: लाभ, मौसम, मिट्टी, बुवाई और सिंचाई के टिप्स

अरबी के पत्तों की मांग आजकल बढ़ रही है। इसकी बाजार की मांग अधिक होने से इसका रेट भी अच्छा खासा मिलता है। अरबी के पत्तों की सब्जी बड़ी चाव के साथ खाई जाती है। यह पत्तें स्वादिष्ट और पोषक तत्वों से भरपूर होते है। अरबी के पत्ते बहुत पौष्टिक होते हैं, इसमें विटामिन ए, बी, सी, कैल्शियम, पोटेशियम और एंटीऑक्सिडेंट बहुत होते हैं। मानव शरीर इन सभी तत्वों से काफी लाभ उठाता है और कई बीमारियों से बचाता है। इसलिए लोग इसे अधिक खरीद कर खाने लगे हैं। यह इन गुणों के कारण किसान इसकी खेती करके अच्छा मुनाफा कमा सकता है। तो आइये जानते हैं कि इसका उत्पादन कैसे किया जाता है।

अरबी की खेती के लिए मौसम

अरबी गर्मी और ठंड दोनों का सामना कर सकती है, इसलिए इसकी खेती दो सीजन में होती है। इसकी खेती खरीफ और रबी दोनों सीजन में की जा सकती है। यह जुलाई के अंत तक खरीफ के मौसम में बोई जा सकती है, जिससे फसल दिसंबर तक तैयार हो जाती है। रबी के समय अक्टूबर में किसान इसकी बुवाई करते हैं, फिर अप्रैल से मई तक फसल तैयार की जाती है। गर्मी और बरसात में इसके पौधे बहुत जल्दी फैलते हैं।

अरबी की खेती के लिए किस प्रकार की मिट्टी की आवश्यकता होती है?

वैसे तो अरबी की खेती हर तरह की मिट्टी में की जा सकती है। मुख्य रूप से इसकी खेती के लिए उचित जल निकासी वाली जमीन की जरूरत है। बालुई दोमट मिट्टी खेती के लिए सबसे अच्छी मानी जाती है। यह खेती करने के लिए भूमि का pH 5.5 से 7 के बीच होना चाहिए। अरबी की खेती के लिए दोनों उष्णकटिबंधीय और समशीतोष्ण जलवायु उपयुक्त हैं।

अरबी की बुवाई कैसे की जाती है?

अरबी के बीजों की रोपाई कंद की तरह होती है, जिसके लिए एक एकड़ में लगभग 10 से 12 क्विंटल बीज की आवश्यकता होती है। कंद की रोपाई से पहले, उन्हें बाविस्टीन या रिडोमिल एमजेड–72 की पर्याप्त मात्रा दी जाती है। इसके बाद कंद की रोपाई दो तरीके से की जाती हैरू एक समतल भूमि में क्यारियों में और दूसरा खेत में मेड़ को तैयार करके 5 से.मी. की गहराई में दोनों तरीके से कंद की रोपाई की जाती है।

अरबी की फसल में सिंचाई कब करे?

गर्मी के मौसम में अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए पौधों को अधिक सिंचाई दी जानी चाहिए। यदि कंदो को बारिश के मौसम में रोपा गया है, तो पौधों को अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होगी। यदि बारिश समय पर नहीं होती, तो पौधों को 20 दिन के अंतराल में सिंचाई करना चाहिएय अगर बारिश होती है, तो सिर्फ जरूरत के हिसाब से पानी देना चाहिए।

एक अकड़ में अरबी की कितनी पैदावार हो जाती है?

अरबी की फसल 130–140 दिनों में तैयार हो जाती है। किसान एक एकड़ से 100–120 क्विंटल पत्तों का उत्पादन कर सकते है। इसका मूल्य बाजार में 8 से 10 रुपये प्रति किलो होता है, लेकिन कभी – कभी 20 से 22 रुपये तक पहुंच जाता है। एक एकड़ में किसान 1.5 से 2 लाख रुपये की कमाई कर सकता है।

भारत में में लैवेंडर की खेती: लाभ, जलवायु और तकनीक पर संपूर्ण गाइड

लैवेंडर एक सुंदर, बहुवर्षीय औषधीय गुणों वाला झाड़ीनुमा पौधा हैं। लैवेंडर के पौधे में तेल पाया जाता है, जिसका इस्तेमाल खाने में, इत्र, सौंदर्य प्रसाधन और साबुन बनाने में किया जाता है। इसके अलावा इसके पौधे का इस्तेमाल कई तरह की बीमारियां दूर करने में भी किया जाता है, इसके फूल गहरे काले नीले, लाल और बेंगानी रंग के होते हैं और दो से तीन फिट ऊंचे होते हैं। लैवेंडर को नगदी फसल कहा जाता है। लैवेंडर की खेती मुख्यतरू सयुंक्त राज्य अमेरिका, कनाड़ा, जापान, आस्ट्रे. लिया और न्यूजीलैंड सहित भूमध्यसागरीय देशों में की जाती है। भारत में लैवेंडर की खेती कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश के कुछ इला. कों में मुख्य रूप से की जाती है।

लैवेंडर की खेती के लिए जलवायु

लैवेंडर एक कठोर और ठंडी जलवायु का पौधा है, जो सूखे और पाले को सहन कर सकता है। इसकी खेती के लिए आदर्श जलवायु प्रणाली ठंडी सर्दियाँ और ठंडी गर्मियाँ है। इसके लिए अच्छी मात्रा में सूर्य की रोशनी चाहिए। इसे जहां बर्फबारी होती है और पहाड़ियां पर भी आसानी से उगाया जा सकता हैं। बीज अंकुरण के समय इन्हें बारह से पंद्रह डिग्री तापमान चाहिए। इसके पौधों का विकास 20 से 22 डिग्री तक होता है। इसके पौधे 10 डिग्री से भी कम तापमान को सहन कर सकते हैं।

लैवेंडर के पौधे की खासीयत

लैवेंडर का पौधा दिखने में सुन्दर होता है, इसके फूल किस्मो के आधार पर दिखने में अलग अलग होते है। लैवेंडर फूल लाल, बैंगनी, नीले और काले रंग के होते हैं, और पौधा दो से तीन फीट ऊँचा होता है। इसके पौधों का मूल स्थान एशिया महाद्वीप है। 10 वर्षों तक, पूरी तरह से विकसित पौधा पैदावार देता है। लैवेंडर की खेती से किसान भाई भी अधिक पैसे कमा रहे हैं।

लैवेंडर की खेती के लिए मिट्टी

लैवेंडर की खेती के लिए कार्बनिक पदार्थो से युक्त रेतीली मिट्टी की आवश्यकता होती है। इसकी खेती वैसे तो हर प्रकार की जगह पर की जाती है। पहाड़ी, मैदानी और रेतीली भूमि में इसकी खेती आसानी से की जा सकती है। खेती के लिए भूमि का च्भ् मान 7 से 8 होना चाहिए।लैवेंडर अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी पसंद करता है। भारी और जलभराव वाली मिट्टी से बचना चाहिए।

लैवेंडर की किस्में

लैवेंडर की उन्नत किस्में निम्नलिखित है – हाइडकोट सुपीरियर, लेडी लैवेंडर, फोल्गेट, बीचवुड ब्लू, भोर ए कश्मीर लैवेंडर आदि।

बुवाई के लिए खेत की तैयारी

पौधे रोपाई से पहले खेत की हल या कल्टीवेटर के माध्यम से 2–3 बार अच्छी गहरी जुताई करना चाहिए।

खाद और उर्वरक प्रबंधन

लैवेंडर की फसल की अच्छी बढ़वार के लिए 6 टनध्एकड़ की दर से अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद को खेत में मिला देना चाहिए। तथा मिट्टी की जांच के आधार पर रासायनिक उर्वरक देना चाहिए। इसके अलावा आखरी जुताई के समय 40 KG फास्फोरस, 40 KG पोटाश और 20 KG नाइट्रोजन की मात्रा का छिड़काव प्रति हेक्टेयर के हिसाब से करना होता है।

लैवेंडर फसल की कटाई

इसके फूलों की कटिंग तब करनी चाहिए जब पौधों में लगभग 50 प्रतिशत से ज्यादा फूल खिल चुके हों। तने की कटाई के दौरान काटी गई शाखाओं की लम्बाई फूल सहित लगभग 12 सेंटीमीटर से कम नही होनी चाहिए। इसके फूलों की कटिंग के बाद उन्हें निम्न तापमान पर रखकर अधिक समय तक उपयोग में लिया जा सकता हैं। किसान इसके फूलों को बाजार में सजावट के रूप में बेचकर नगद लाभ कमा सकते हैं।

BHARAT CERTIS®
AGRISCIENCE LTD
A Group Company of Mitsui & Co., Ltd., Japan

हिमाराया

मिटाए खरपतवारों का साया
कपास के चौड़ी पत्ती खरपतवारों का उत्तम समाधान

ट्यूलिप फूलों की खेती: जलवायु, मिट्टी, और प्रमुख किस्मों के साथ संपूर्ण मार्गदर्शिका

ट्यूलिप फूल बहुत लोकप्रिय फूल है। ट्यूलिप एक महत्वपूर्ण फूल है। जो अन्य फूलों की तुलना में अधिक पैदावार और खुसबू देता है। पौधों में दो से छह चौड़े, पतले पत्ते होते हैं, जो नीला–हरे दिखते हैं। फूल अक्सर कप के आकार के होते हैं, जिसमें तीन पंखुड़ियाँ और तीन सेपल्स होते हैं। कुछ ट्यूलिप गुंबद या तारे के आकार के होते हैं। ट्यूलिप सबसे पुराने पौधों में से हैं और सच्चे नीले को छोड़कर हर रंग का उत्पादन करने के लिए संकरण किया गया है। ट्यूलिप में आमतौर पर एक फूल हर तने पर होता है, लेकिन कुछ में कई फूल होते हैं। ट्यूलिप के हजारों प्रकार हैं, जो खिलने के समय, आकार और ऊंचाई पर आधारित हैं। ट्यूलिप बारहमासी होता है, आजकल इस फूल की मांग बढ़ रही है। इसकी खेती करके किसान अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। इस लेख में आप ट्यूलिप फूलों की खेती के बारे में विस्तार से जानेंगे।

ट्यूलिप फूलों की खेती के लिए जलवायु?

ट्यूलिप ठंडे–से–ठंडे सर्दियों और शुष्क, गर्म ग्रीष्मकाल वाले क्षेत्रों में अच्छा फलता हैं। इसके फूल को खिलने के लिए 55 डिग्री फारेनहाइट से नीचे के तापमान की आवश्यकता होती है, इसलिए ठंडे सर्दियों के तापमान वाले क्षेत्रों में, उन्हें वार्षिक रूप से लगाया जाना चाहिए। ट्यूलिप आर्द्र क्षेत्रों की बजाय शुष्क क्षेत्रों में बेहतर ग्रो करते हैं, क्योंकि उच्च गर्मियों की बारिश के कारण बल्ब सड़ सकते हैं।

किस प्रकार की मिट्टी की आवश्यकता होती है?

ट्यूलिप के फूलों की खेती के लिए pH अम्लीय होना चाहिए। ये फूल दोमट और रेतीली मिटटी में भी अच्छा उत्पादन देता है। उचित पोषक तत्वों से भरपूर मिटटी में फूलों की अच्छी उपज प्राप्त होती है। बल्ब लगाने से पहले आप मिट्टी पर कुछ इंच जैविक खाद डाल सकते हैं ताकि वह अधिक उत्पादन दे सके। जिससे पौधे के झुकाव और जड़ो के परिसंचरण में सुधार होगा।

ट्यूलिप की Propagation कैसे करें?

इस पौधे को बल्ब्स के द्वारा लगाया जाता है। ऐसा करने का अधिक सामान्य तरीका बल्बों को उठाना और ऑफसेट बल्ब को विभाजित करना है, जो की मुख्य पौधों के बल्ब से जुड़े होते हैं। इसके लिए नए छोटे पौधों का चुनाव किया जाना चाहिए। एक ट्रॉवेल या कुदाल के साथ बल्बों को खोदें, फिर मिट्टी को हाथ से हटाए, और धीरे से मुख्य पौधे के बल्ब से छोटे ऑफसेट बल्बों को तोड़ दें। ऑफसेट का निरीक्षण करें और जो भी नरम या विकृत दिखाई दे, उसका प्रयोग न करे। नम, शांत–से–शीत सर्दियों और गर्म, शुष्क ग्रीष्मकाल जलवायु में बारहमासी के रूप में ट्यूलिप सबसे अच्छा बढ़ता है।

ट्यूलिप की रोपाई कैसे करे?

अच्छी तरह से सुखी मिट्टी के स्थान में, बल्बों को 4 से 8 इंच गहरे (बल्बों के आकार का लगभग तीन गुना गहराई) में रोपण करें। ट्यूलिप वसंत में जल्दी अंकुरित और खिलते हैं, ट्यूलिप पेड़ों और झाड़ियों के नीचे अच्छी तरह से ग्रो कर सकते हैं। लगभग 10 बल्बों के समूह में लगाए जाने पर ट्यूलिप सबसे अच्छा प्रदर्शन करते हैं। ट्यूलिप कभी–कभी वार्षिक रूप से उगाए जाते हैं, विशेष रूप से संकर प्रजातियां। पहले वर्ष में ट्यूलिप केवल पत्तो का उत्पादन करेंगे कोई फूल नहीं आएंगे। दूसरे वर्ष में इसके ऊपर फूल आते है।

ट्यूलिप की किस्में (Tulip Varieties) कौन – कौन सी है?

- Purissima (Fosteriana division): बहुत जल्दी, पीली पंखुड़ियाँ जो सफेद रंग की हो जाती हैं।
- Ballarina (Lily division): सुगंधित, नुकीली, नारंगी पंखुड़ियों वाला होता हैं।
- Ballarina (Fosteriana division): सफेद पीले सफेद जो पंख की तरह दिखते हैं।
- Prinses Irene (Triumph division): रेम्ब्रांट–शैली नारंगी पंखुड़ियों के साथ बरगंडी रंग का होता हैं।
- Spring green (Viridflora division): हरे रंग की पंखुड़ियों वाली हरी केंद्र धारियां, देर से खिलने वाला और लंबे समय तक चलता हैं।

भारत में भैंस पालन के लिए 4 उन्नत नस्लें: अधिक दूध उत्पादन के लिए बेहतरीन विकल्प

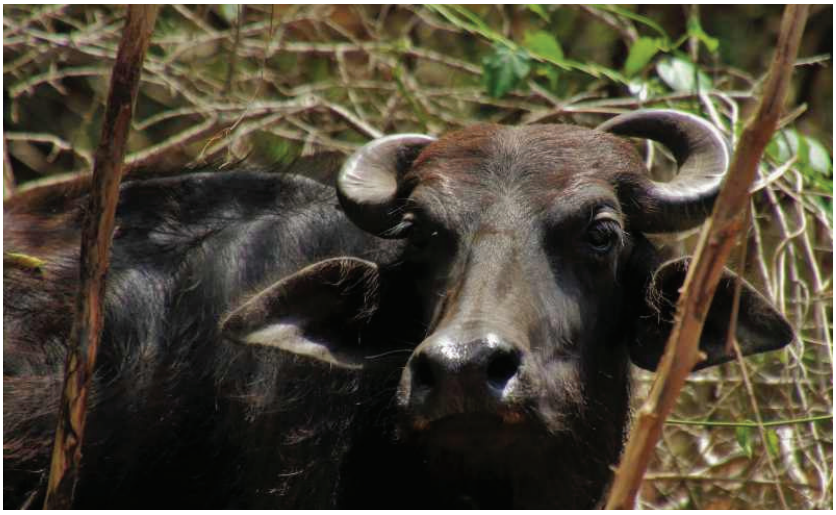

कृषकों के लिए पशुपालन उनकी आमदनी बढ़ाने का सर्वोत्तम जरिया है। दरअसल, आज के दौर में भैंस पालन का कार्य काफी तेजी से बढ़ रहा है। गांव के साथ–साथ शहरों में भी अब लोग भैंस पालन का व्यवसाय कर काफी शानदार आमदनी कर रहे हैं। यदि आप भी हाल–फिलहाल में भैंस पालन करना चाहते हैं, तो इसके लिए आपको इनकी उन्नत नस्ल की जानकारी होनी चाहिए। ताकि आप उनका पालन सुगमता से कर अपनी आय को बढ़ा सकें। दूध एक तरह से अमृत ही है, क्योंकि देश को स्वास्थ्य और शक्ति प्रदान करने में अपनी अहम भूमिका निभाता है। भारत के कृषकों और पशुपालकों के लिए आज हम भैंस की 4 शानदार नस्लों की जानकारी प्रदान करेंगे। जो कि एक ब्यांत में लगभग 1000 से 6054 लीटर दूध प्रदान करती है।

1. भैंस की बन्नी नस्ल

भैंस की बन्नी नस्ल (Banni Breed of Buffalo) गुजरात के कच्छ जनपद में पाई जाती है। इसका शरीर कॉम्पैक्ट, पच्चर आकार का होता है। इस नस्ल की भैंस के शरीर की लंबाई 153 सेंटीमीटर और पूंछ की लम्बाई 85 से 90 से.मी. तक होती है। नर बन्नी भैंस का भार 525–562 किलोग्राम और मादा बन्नी भैंस का भार 475–575 किलोग्राम होता है। यह भैंस काले रंग की होती है। परंतु, 5% प्रतिशत तक इस भैंस में भूरा रंग शम्मिलित हो सकता है। इस भैंस के निचले पैरों, माथे और पूंछ में सफेद धब्बे होते हैं। बन्नी मादा भैंस के सींग ऊर्ध्वाधर दिशा में मुड़े हुए होते हैं। साथ ही, कुछ फीसद उलटे दोहरे गोलाई में होते हैं। बन्नी भैंस एक ब्यांत में 1095 से 6054 लीटर तक दूध प्रदान करती है। वही, यह भैंस रोजाना 10 से 18 लीटर दूध प्रदान करती है। बन्नी भैंस के दूध में 4–12 % फीसद फैट की मात्रा पाई जाती है।

2. भैंस की भदावरी नस्ल

भैंस की भदावरी नस्ल (Bhadawari breed of buffalo) मध्य प्रदेश के भिंड, मुरैना जिले और उत्तर प्रदेश के आगरा, इटावा जनपद में पाई जाती है। इस भैंस की हाइट 124 सेंटीमीटर तक होती है और इसके शरीर की लंबाई 134 सेंटीमीटर तक होती है। वही, इस भैंस का समकुल भार लगभग 410 किलोग्राम तक होता है। जब इस भैंस का जन्म होता है। तब इसका भार लगभग 25 किलोग्राम तक होता है। अगर हम भदावरी भैंस के दूध की बात करें, तो भैंस की यह नस्ल एक ब्यांत में 540 से 1400 लीटर तक दूध प्रदान करती है। इस भैंस की पहले ब्यांत की आयु 13 से 21 महीने होती है। भदावरी नस्ल की भैंस के दूध में 6 से 13 प्रतिशत फैट की मात्रा पाई जाती है।

3. भैंस की जाफराबादी नस्ल

भैंस की जाफराबादी नस्ल (Jafrabadi breed of buffalo) गुजरात के अमरेली, भावनगर, जामनगर, राजकोट और पोरबंदर में सर्वाधिक पाली जाती है। इस भैंस की लंबाई लगभग 139 सेंटीमीटर तक होती है और शरीर की लंबाई 157 सेंटीमीटर तक होती है। इसके अतिरिक्त जाफराबादी नस्ल की भैंस का कुल वजन 620 किलोग्राम तक होता है। जाफराबादी भैंस एक ब्यांत में लगभग 2150 से 2340 लीटर तक दूध प्रदान करती है। इस भैंस के पहले ब्यांत की आयु 41 से 55 महीने तक होती है। जाफराबादी भैंस के दूध में लगभग 7–9 प्रतिशत फैट पाया जाता है।

4. भैंस की सुरती नस्ल

भैंस की सुरती नस्ल (Surti breed of buffalo) को गुजरात के वडोद. रा, कच्छ, खेड़ा और सूरत जिले में सबसे ज्यादा पाला जाता है। इस भैंस की हाईट 130 सेंटीमीटर तक होती है। सुरती भैंस के शरीर की लंबाई 149 सेंटीमीटर तक होती है और इस भैंस का कुल वजन 401 किलोग्राम तक होता है। भैंस की सुरती नस्ल एक ब्यांत में लगभग 1667 लीटर तक दूध प्रदान करती है। इसके पहले ब्यांत की आयु 35 से 58 माह होती है। सुरती भैंस के दूध में 4–9 फीसद फैट की मात्रा पाई जाती है।

Dairy Farming: सफलता की श्वेत धारा, जानिए होती क्या है?

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ सदियों से पशुपालन और खेती का गहरा रिश्ता रहा है। दुग्ध कृषि, पशुपालन का ही एक महत्वपूर्ण अंग है, जो न केवल पौष्टिक दूध का उत्पादन करता है बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ भी है। आइए, इस लेख के माध्यम से दुग्ध कृषि को गहराई से समझते है।

दुग्ध कृषि क्या है?(What is Dairy Farming)

दुग्ध कृषि पशुओं, मुख्यतः गाय, भैंस, बकरी आदि के पालन और उनके दूध उत्पादन का व्यवसाय है। इसमें पशुओं के चारे का प्रबंधन, उनके रहने का स्थान (गोशाला), उनके स्वास्थ्य की देखभाल और दूध निकालने से लेकर प्रसंस्करण और विपणन तक सभी कार्य शामिल होते हैं। यह एक लाभदायक व्यवसाय है जो ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी पैदा करता है।

दुग्ध पशुओं का चयन कैसे करें? (How to Select Animals for Dairy Farming?)

सफल दुग्ध कृषि के लिए उपयुक्त पशुओं का चयन सबसे महत्वपूर्ण कदम है। पशुओं का चुनाव कई कार. कों पर निर्भर करता है, जैसे:

जलवायु

विभिन्न नस्लों के पशु अलग–अलग जलवायु के अनुकूल होते हैं। गर्म जलवायु के लिए थारपारकर या गिर गाय उपयुक्त मानी जाती हैं, वहीं ठंडे इलाकों के लिए होल्स्टीन फ्रिजियन नस्ल बेहतर विकल्प है।

दूध उत्पादन क्षमता

विभिन्न नस्लों के पशुओं में दूध देने की क्षमता अलग–अलग होती है। अपनी जरूरत के हिसाब से अधिक दूध देने वाली नस्ल का चयन करना चाहिए।

आहार संबंधी आवश्यकताएं

कुछ नस्लों के पशुओं को अधिक मात्रा में चारे की आवश्यकता होती है, जबकि कुछ कम में ही अच्छा दूध दे देते हैं। अपने क्षेत्र में उपलब्ध चारे के आधार पर पशुओं का चुनाव करना चाहिए।

प्रजनन क्षमता

अच्छी प्रजनन क्षमता वाली गायों या भैंसों का चयन करना चाहिए ताकि दूध उत्पादन का सिलसिला बना रहे। पशुओं का चयन करते समय अनुभवी पशुपालकों या पशु चिकित्सकों की सलाह लेनी चाहिए। साथ ही, सरकारी पशु आश्रय स्थलों या पंजीकृत प्रजनन केंद्रों से ही पशुओं को खरीदना चाहिए।

पशु प्रबंधन (Animal Management)

दुधारू पशुओं का उचित प्रबंधन उनकी उत्पादकता को सीधे प्रभावित करता है। इसमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए:

आवास (Shelter)

पशुओं के लिए साफ–सुथरा, हवादार और रोशनी वाला गोशाला होना चाहिए। रहने की जगह पर्याप्त होनी चाहिए ताकि पशु आराम से खड़े हों, लेट सकें और घूम सकें।

चारा (Fodder)

पशुओं को संतुलित आहार देना चाहिए जिसमें हरा चारा, सूखा चारा, खली और दाना शामिल हों। आहार उनकी उम्र, नस्ल और दूध उत्पादन क्षमता के अनुसार होना चाहिए।

स्वच्छता (Hygiene)

गोशाला की नियमित रूप से सफाई करनी चाहिए और पशुओं को भी साफ रखना चाहिए। इससे उनके स्वास्थ्य में सुधार होता है और दूध की गुणवत्ता भी अच्छी रहती है।

स्वास्थ्य देखभाल (भ्मंसजीबंतम)

पशुओं का नियमित रूप से टीकाकरण करवाना चाहिए और उनकी स्वास्थ्य जांच करानी चाहिए। किसी भी तरह की बीमारी के लक्षण दिखाई देने पर तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।

यरी फार्मिंग सब्सिडी योजना

भारत सरकार डेयरी उद्योग को बढ़ावा देने और किसानों को सशक्त बनाने के लिए अनेक सब्सिडी योजनाएं चलाती है। इन योजनाओं का लाभ उठाकर किसान डेयरी फार्म स्थापित कर सकते हैं, पशुधन उत्पादकता बढ़ा सकते हैं और अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। इन योजनाओं से जुडी सम्पूर्ण जानकारी आप https://www-nddb-coop, https://agri-welfare-gov-in इन दोनों वेबसाइट पर जा कर प्राप्त कर सकते है।

जानिए गर्मी के मौसम में कैसे रखे पशुपालक अपने दुधारू पशुओं का ध्यान

गर्मी का मौसम दुधारू पशुओं के लिए मुश्किल हो सकता है। तापमान में वृद्धि से पशुओं में तनाव, दूध उत्पादन में कमी और बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। पशुपालकों को इस मौसम में अपने पशुओं का विशेष ध्यान रखना चाहिए। गर्मियों का मौसम वह समय होता है जब डेयरी उत्पादकों को अपनी गायों, भैंसों और अन्य पशुओं की देखभाल में विशेष सावधानी बरतनी पड़ती है। इस मौसम में शीतल पदार्थ और विशेष खाद सामग्रियों की आवश्यकता होती है ताकि पशुओं को ठंडक मिल सके। इस लेख में हम डेयरी पशुओं की गर्मियों में देखभाल के बारे में जानकारी देंगे।

गर्मी मे पशुओ का रखरखाव

- पशुओं को तेज धूप से बचाने के लिए पर्याप्त छायादार जगह प्रदान करें।
- शेड खुले और हवादार होने चाहिए ताकि हवा का प्रवाह अच्छा हो।
- पशुओं को दिन के सबसे गर्म समय में शेड में रहने के लिए प्रोत्साहित करें।

पशुओं को दिन में कई बार पानी पिलाये

गर्मियों में डेयरी पशुओं को ठंडा पानी देना बेहद आवश्यक होता है। पशुओं को प्रतिदिन अधिकतम पानी देना चाहिए जिससे वे ठंडा रहें। अधिक गर्म दिनों में, पशुओं को दिन में कई बार ठंडा पानी पिलाएं। ताकि पशु न तो खुश्क हों और न ही उनके शरीर में उष्णता बढ़े। पशुओं को ताजा और साफ पानी 24 घंटे उपलब्ध कराएं।

पशुओं को नियमित रूप से नहलाएं

- पशुओं को दिन में दो बार ठंडे पानी से नहलाएं।
- पशुओं पर ठंडे पानी का छिड़काव करें।
- यह उन्हें ठंडा रखने और कीटों को दूर रखने में मदद करेगा।

गर्मी के मौसम में पोषण तत्वों का रखें विशेष ध्यान

डेयरी पशुओं को गर्मियों में अधिक पोषण की आवश्यकता होती है। अब पशु को अधिक उत्पादक बनाने के लिए अधिक पोषक तत्वों की जरूरत है। उन्हें चावल का ब्रान, घास और शीतल भोजन देना चाहिए। पशु को हर दिन 100 ग्राम मिनरल मिक्सचर चारे और सरसों का तेल देकर दूध की उत्पादकता बढ़ाएं। अगर आपके पास गर्मी के समय हरा चारा उपलब्ध है, तो पशु को पर्याप्त मात्रा में हरा चारा देना चाहिए ताकि उसके शरीर में पर्याप्त मात्रा में पानी बानी रहे और गर्मी से बचने के लिए उसे कम गर्मी लगे। गर्भवती गायों, भैंसों का गर्मियों में ज्यादा ध्यान रखना आवश्यक है, ये ध्यान अवश्य रखे की पशु को धूप न लगे, पशुओं को गर्मी से बचाने के लिए पंखे या कूलर का भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

गर्मी के मौसम में पशुपालकों के ध्यान रखे योग्य अन्य बातें

- मच्छरों, मक्खियों, टिक्स आदि का प्रकोप बढ़ रहा है, इसे फैलने से रोकने के लिए उचित सावधानी बरतने की जरूरत है।
- अगर पशुओं को अभी तक एफएमडी, ब्लैक क्वार्टर, एंटरोटॉक्सिमिया के खिलाफ टीका नहीं लगाया गया है, तो सुनिश्चित करें कि यह किया गया है।
- दुग्ध उत्पादन को बनाए रखने के लिए पशुओं को पर्याप्त मात्रा में चारा खिलाएं।
- दुधारू पशुओं को खली और खनिज मिश्रण मिलाकर खिलाना चाहिए ताकि शरीर का तापमान बना रहे।
- पशुओं को नियमित रूप से पशु चिकित्सक द्वारा जांच करवाएं।
- टीकाकरण और डी–वर्मिंग समय पर करवाएं।
- किसी भी बीमारी या संक्रमण के लक्षणों के लिए पशुओं की निगरानी करें।

भारतीय गाय नस्लों का वर्गीकरण और उनके अनूठे गुण

भारतीय मवेशियों की विशेषताएँ

भारत में मवेशियों को आमतौर पर दूध और डेयरी उत्पादों के लिए पाला जाता है। भारत में, मवेशी हिंदू धर्म के अंतर्गत पवित्र जानवर हैं, और उन्हें मारा नहीं जा सकता। भारतीय मवेशियों का वैज्ञानिक नाम बोस इंडिकस है जो बोविडे परिवार से संबंधित है। भारतीय मवेशियों की नस्लों ने भारतीय लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और निभाती रहेंगे। नवीनतम निष्कर्षों के अनुसार, देश में डेयरी, सूखा, दोहरे उद्देश्य वाली नस्लों सहित लगभग 50 मवेशी नस्लें हैं। यहां आप पशुओं की मुख्य नस्लों के बारे में जानेंगे।

भारत में गायों की प्रमुख नस्लों का वर्गीकरण

भारत में गायों की नस्लों को मुख्य रूप से उस उद्देश्य के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है जिसके लिए उन्हें पाला जाता है। वर्गीकरण के आधार पर, यह स्पष्ट है कि भारत में गाय की नस्लों के प्रकार हैं – डेयरी या दूध देने वाली नस्लें, सूखी नस्लें और दोहरे उद्देश्य वाली नस्लें।

भारत गायों की कई अलग–अलग नस्लों का घर है और अपनी जीवंत संस्कृति और विविध परिदृश्यों के लिए प्रसिद्ध है। पीढ़ियों से, मवेशी भारतीय कृषि और ग्रामीण जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा रहे हैं, जो देश की अर्थव्यवस्था, संस्कृति और धार्मिक रीति–रिवाजों में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। प्रत्येक नस्ल के अपने विशिष्ट गुण और अर्थ होते हैं। हम इस ब्लॉग में कुछ प्रसिद्ध गाय नस्लों की जानकारी देंगे जो पूरे भारत में पाई जाती हैं।

1. डेयरी या दुधारू नस्लें

इन नस्लों की गायें अधिक मात्रा में दूध देती हैं जबकि इनके नर पशु कम मेहनत करने वाले होते हैं। भारतीय डेयरी नस्लों में साहीवाल, लाल सिंधी, गिर और थारपारकर शामिल हैं। मवेशियों की नस्लें आमतौर पर ब्यात के दौरान 1600 किलोग्राम से अधिक दूध का उत्पादन करती हैं।

2. दोहरे उद्देश्य वाली नस्लें

इन नस्लों की गायें प्रति ब्यात औसत मात्रा में दूध देती हैं और नर पशु उत्कृष्ट श्रमिक होते हैं। प्रत्येक ब्यात के दौरान, वे 500–1500 किलोग्राम दूध का उत्पादन करते हैं। हरियाना, कांकरेज, थारपारकर, इस श्रेणी के कुछ उदाहरण हैं।

3. सूखी नस्लें (Draught Breeds)

इस नस्ल की गायें प्रत्येक ब्यात के दौरान औसतन 500 किलोग्राम से कम दूध देती हैं, नर पशु काम के लिए अधिक उपयुक्त होते हैं। आमतौर पर इनका रंग सफेद होता है। बैल जोड़े में 1000 किलोग्राम वजन खींच सकते हैं। एक अच्छी सड़क पर लोहे से बनी गाड़ी का उपयोग करते हुए 5 से 7 कि.मी.ध्घंटा की गति से चलते हुए प्रतिदिन 30 से 40 किलोमीटर की दूरी तय कर सकते हैं। एक वायवीय रबर ट्यूब कार्ट दोगुना वजन खींच सकती है। इस समूह के उदाहरणों में हल्लीकर, अम्बलाचेरी, अमृतमहल और कंगायम शामिल हैं।

SONALIKA
HEAVY DUTY TRACTOR RANGE

सोनालीका DI 730

आपका पहला ट्रैक्टर

दमदार इंजन

ट्रॉली पाइप

तेल में डूबे ब्रेक्स

एस्कॉर्ट स्टीलट्रैक 25 ट्रैक्टर: बागवानी के लिए एक उत्तम चुनाव

स्टीलट्रैक ट्रैक्टर, एस्कॉर्ट कंपनी का ब्रांड है जो बेहतरीन ट्रैक्टर बनाती है। आज के लेख में हम एस्कॉर्ट स्टीलट्रैक 25 ट्रैक्टर के बारे में बताएँगे। स्टीलट्रैक ट्रैक्टर आम तौर पर छोटे होते हैं। इन ट्रैक्टरों को बागवानी कार्यों के लिए बनाया गया है। ये ट्रैक्टर कई सुविधाओं और शक्तिशाली इंजन के साथ बनाए गए हैं, जिससे आप सभी प्रकार के कार्य आसानी से कर सकते हैं। एस्कॉर्ट स्टीलट्रैक 25 ट्रैक्टर फीचर्स, स्पेसिफिकेशन्स और मूल्यों के बारे में अधिक जानकारी के लिए लेख के अंत तक पढ़ें।

एस्कॉर्ट स्टीलट्रैक 25 ट्रैक्टर के बारे में विवरण

स्टीलट्रैक 25 ट्रैक्टर के इंजन की बात करे तो इस ट्रैक्टर में आपको 23 HP का शक्तिशाली इंजन मिल जाता है। इस ट्रैक्टर के इंजन में सिलिंडर (Cylinder) की संख्या 2 है और इसकी क्यूबिक कैपेसिटी (cubic capacity) 1290 CC है। इस ट्रैक्टर का इंजन 88.3 NM टार्क (Torque) उत्पन करता है।

एस्कॉर्ट स्टीलट्रैक 25 के फीचर्स

ट्रांसमिशन (Transmission)

स्टीलट्रैक 25 ट्रैक्टर का ट्रांसमिशन सिंक्रोमेश (Synchromesh) टाइप का होता है, जिससे यह ट्रैक्टर सुचारू रूप से चलता है।

गियरबॉक्स (Gearbox)

किसानों की सुविधा के लिए, इस ट्रैक्टर में 8 Forward 2 Reverse गियर्स मिलते हैं, जो विभिन्न परिस्थितियों में बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

स्पीड (Speed)

इस ट्रैक्टर की आगे की गति 31.4 kmph और रिवर्स गति 34.2 kmph है, जिससे यह तेजी से और कुशलता से कार्य कर सकता है।

स्टीयरिंग (Steering)

स्टीलट्रैक 25 में मैकेनिकल स्टीयरिंग (Mechanical Steering) दी गई है, जिससे कम स्थान में भी आसानी से काम किया जा सकता है।

फ्यूल टैंक कैपेसिटी (Fuel Tank Capacity)

इस ट्रैक्टर में 17.4 लीटर की ईंधन टैंक क्षमता है, जिससे यह लंबे समय तक चल सकता है।

हाइड्रोलिक लिफ्टिंग कैपेसिटी (Hydraulic Lifting Capacity)

इस ट्रैक्टर की हाइड्रॉलिक्स लिफ्टिंग क्षमता 550 किलोग्राम है, जिससे यह भारी वजन उठाने में सक्षम है।

टायर्स (Tyres)

स्टीलट्रैक 25 ट्रैक्टर में प्रभावी कार्य के लिए मल्टीपल ट्रेड पैटर्न वाले टायर होते हैं, जो विभिन्न प्रकार की सतहों पर बेहतर पकड़ प्रदान करते हैं। Merikheti के हमारे इस लेख में आपने स्टीलट्रैक 25 ट्रैक्टर के बारे में जाना है। आपके पास स्टीलट्रैक 25 से संबंधित कोई और प्रश्न हैं, तो आप हमसे संपर्क कर सकते हैं। Merikheti पर आपको सभी प्रकार के ट्रैक्टरों, औजारों और अन्य कृषि उपकरणों से संबंधित सभी नवीनतम जानकारी मिलती है।

भारत के 7 सर्वश्रेष्ठ शक्तिशाली और आधुनिक फीचर्स वाले ट्रैक्टर: विशेषताएँ और कीमतें

भारत में शक्तिशाली इंजन और आधुनिक फीचर्स वाले ट्रैक्टरों की मांग लगातार बढ़ रही है। इन ट्रैक्टरों से किसान अपनी आवश्यकताओं को कुशलतापूर्वक पूरा कर सकते हैं और कृषि उत्पादकता में तेजी से वृद्धि कर सकते हैं। शक्तिशाली इंजन और आधुनिक फीचर्स वाले ट्रैक्टरों की की खोज करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए नीचे 7 सर्वश्रेष्ठ ट्रैक्टरों की सूची दी गई है, प्रत्येक ट्रैक्टर की विशेषताओं और कीमत के साथ।

1. स्वराज 744 XT ट्रैक्टर

- स्वराज 744 XT ट्रैक्टर शक्तिशाली ट्रैक्टर है और खेती के दौरान किसी भी चुनौती को आसानी से पार करने के लिए बनाया गया है।
- यह अद्वितीय सुविधा देता है और इसकी नवीन सुविधाएँ और नवाचार खेती को आसान बनाते हैं।
- भारतीय किसान इस ट्रैक्टर को अपने उच्च प्रदर्शन वाले इंजन, इनलाइन ईंधन इंजेक्शन पंप, आंशिक स्थिर जाल ट्रांसमिशन और कम रखरखाव लागत के कारण बहुत पसंद करते है।
- यह 50 एचपी इंजन द्वारा संचालित है जिसमें 3 सिलेंडर हैं।
- इंजन की क्षमता 3478cc है, जो 2000 ERPM जेनरेट कर सकता है।
- स्वराज 744 XT ट्रैक्टर में आपको 8 वितूंतक और 2 तमअमतेम गियर्स मिल जाते है।
- ट्रैक्टर को नियंत्रित करने के लिए इसमें oil & immersed brakes है और power steering आपको मिलता है।
- इस ट्रैक्टर की स्पजिपदह ब्वंबपजल 1700 kg है।
- भारत में स्वराज 744 XT ट्रैक्टर की कीमत 6.98 लाख से 7.50 लाख रुपये तक है।

2. सोनालिका 745 DI III सिकंदर ट्रैक्टर

- सोनालिका 745 DI III सिकंदर 50 HP ट्रैक्टर सेगमेंट में बहुत लोकप्रिय है। यह कृषि क्षेत्रों में अधिकतम प्रदर्शन के लिए बहुत स्पष्ट रूप से बनाया गया है।
- इस ट्रैक्टर का शक्तिशाली इंजन बहुत से भारी भार वाले ऑपरेशनों के लिए उपयुक्त है।
- सोनालिका 745 DI III सिकंदर 50 HP मॉडल में 3 सिलेंडर का इंजन है, 3067cc की क्षमता है और 1900 ERPM बनाता है।
- इसके गियरबॉक्स में 8 forward और 2 reverse गियर्स हैं, और इसमें कतल disc और oil & immersed brakes भी दिए गए है।
- सोनालिका 745 DI III सिकंदर की Lifting Capacity 2000 किलोग्राम है।
- सोनालिका 745 DI III सिकंदर ट्रैक्टर की कीमत 7.30 से 7.90 लाख रूपए तक है।

3. महिंद्रा 585 DI XP प्लस ट्रैक्टर

- महिंद्रा 585 DI XP प्लस एक शक्तिशाली ट्रैक्टर है जिसमें उन्नत तकनीक, शक्तिशाली इंजन और काफी कम ईंधन खपत वाला इंजन दिया गया है।
- यह महिंद्रा 2x2 ट्रैक्टर स्मूथ कॉन्स्टेंट मेश ट्रांसमिशन, उच्च शुद्धता हाइड्रोलिक्स और उच्च गुणवत्ता वाले ब्रेकिंग सिस्टम से लैस है, जो कृषि कार्यों में बहुत कुशल है।
- महिंद्रा 585 DI XP प्लस ट्रैक्टर में 4 सिलेंडर और 3054cc क्षमता वाला 50 HP इंजन 2100 ERPM उत्पन्न करता है।
- इसमें 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर हैं।
- यह दो विकल्पों के साथ आता है, ड्राई डिस्क और तेल में डूबे हुए ब्रेक।
- इसमें वैकल्पिक मैनुअल स्टीयरिंग के साथ पावर स्टीयरिंग है।
- इसका वजन 1620 किलोग्राम है और Lifting Capacity 1800 किलोग्राम है।
- महिंद्रा 585 DI XP प्लस की कीमत की बात करे तो इस ट्रैक्टर की कीमत 6.90 से 7.80 लाख तक है।

4. पॉवरट्रैक यूरो 50 ट्रैक्टर

- ईंधन दक्षता और विश्वसनीयता के कारण यह मॉडल किसानो के बीच बहुत लोकप्रिय है।
- भारतीय किसानों ने पॉवरट्रैक यूरो 50 ट्रैक्टर को उच्च उत्पादकता दरों, कम रखरखाव खर्चों और सेवा केंद्रों की आसानी के लिए चुना है। यह कृषि कार्यों के लिए भी बेहतरीन ट्रैक्टरों में से एक है।
- पॉवरट्रैक यूरो 50 ट्रैक्टर में 50 एचपी इंजन में 3 सिलेंडर होते हैं, साथ ही 2761cc की क्षमता वाला इंजन 2200 म्त्च्ड जेनरेट कर सकता है।
- इसमें 8 forward and 2 reverse gears आपको मिलते है।
- ट्रैक्टर को नियंत्रित करने के लिए इसमें oil & immersed brakes है और balanced power steering आपको मिलता है।
- इस ट्रैक्टर की Lifting Capacity 2000 kg है।
- पॉवरट्रैक यूरो 50 ट्रैक्टर की कीमत 8.50 से 8.90 लाख रूपए तक है।

5. मैसी फर्ग्यूसन 254 डायनास्मार्ट ट्रैक्टर

- मैसी फर्ग्यूसन 254 डायनास्मार्ट ट्रैक्टर, प्रसिद्ध ट्रैक्टर मॉडल में से एक है। इसमें एक ड्राई डुअल–एलिमेंट एयर फिल्टर की सुविधा है, जो धूल से बचाता है।
- इनलाइन एफआईपी ईंधन पंप, मैसी फर्ग्यूसन 254 डायनास्मार्ट ट्रैक्टर की एक महत्वपूर्ण विशेषता है।
- यह 50 एचपी इंजन द्वारा संचालित है जिसमें 3 सिलेंडर हैं।
- इंजन की क्षमता 2700cc है।
- मैसी फर्ग्यूसन 254 डायनास्मार्ट ट्रैक्टर में आपको 12 forward और 12 reverse गियर्स मिल जाते है।
- Oil immersed brakes बेहतर पकड़ और फिसलन की कम संभावना के लिए जिम्मेदार है, साथ ही इस ट्रैक्टर में आपको पावर steering मिलता है।
- इस ट्रैक्टर की Lifting Capacity 2050 kg तक है।
- मैसी फर्ग्यूसन 254 डायनास्मार्ट ट्रैक्टर की कीमत 7.50 से 8.50 लाख रूपए तक है।

6. इंडो फार्म 3048 DI ट्रैक्टर

- इंडो फार्म 3048 DI ट्रैक्टर एक बहुत शक्तिशाली ट्रैक्टर है, जो दो ड्राइवरों और चार ड्राइवरों में से एक है। यह मजबूत है और इसे चलाना आसान है।
- यह तेल में डूबे हुए ब्रेक, पावर स्टीयरिंग, हेवी ड्यूटी फ्रंट एक्सल, रिवर्स पीटीओ, डुअल क्लच और अन्य नवीनतम सुविधाओं से लैस है, जो इसे भारी भार के कामों के लिए उपयुक्त बनाते हैं।
- इंडो फार्म 3048 DI ट्रैक्टर 50 एचपी इंजन द्वारा संचा. लित है जिसमें 3 सिलेंडर हैं।
- इंजन की क्षमता 2856cc है, जो 2200 ERPM जेनरेट कर सकता है। इस ट्रैक्टर में आपको 8 forward और 2 reverse गियर्स मिल जाते है।
- ट्रैक्टर को नियंत्रित करने के लिए इसमें वपस–पउ. उमतेमक इतांमे है और power steering आपको मिलता है।
- इंडो फार्म 3048 DI ट्रैक्टर की स्पजिपदह ब्ंबपजल 1800 kg है।
- इंडो फार्म 3048 DI ट्रैक्टर की कीमत 7.10 से 7.40 लाख रूपए तक है।

7. न्यू हॉलैंड 3630 TX प्लस ट्रैक्टर

- न्यू हॉलैंड 3630 TX प्लस शक्तिशाली ट्रैक्टर है और खेती के दौरान किसी भी चुनौती को आसानी से पार करने के लिए बनाया गया है।
- यह अद्वितीय सुविधा देता है और इसकी नवीन सुविधाएँ और नवाचार खेती को आसान बनाते हैं।
- भारतीय किसान इस ट्रैक्टर को अपने उच्च प्रदर्शन वाले इंजन, इनलाइन ईंधन इंजेक्शन पंप, आंशिक स्थिर जाल ट्रांसमिशन और कम रखरखाव लागत के कारण बहुत पसंद करते है।
- यह 50 एचपी इंजन द्वारा संचालित है जिसमें 3 सिलेंडर हैं।
- न्यू हॉलैंड 3630 TX प्लस ट्रैक्टर इंजन की क्षमता 2991 CC है, जो 2300 RPM जेनरेट कर सकता है।
- इस ट्रैक्टर में आपको 12 forward और 3 reverse गियर्स मिल जाते है।
- न्यू हॉलैंड 3630 TX प्लस ट्रैक्टर को नियंत्रित करने के लिए इसमें oil & immersed brakes है और power steering आपको मिलता है।
- इस ट्रैक्टर की Lifting Capacity 1700 kg और ऑप्शनल 2000KG है।
- न्यू हॉलैंड 3630 TX प्लस ट्रैक्टर की कीमत 9.75 से 10.40 लाख रूपए तक है।

पॉवरट्रैक 434 डीएस प्लस ट्रैक्टर: शानदार डिजाइन, डीजल सेवर तकनीक और 35 HP की शक्ति

पॉवरट्रैक 434 डीएस प्लस ट्रैक्टर सुपर आकर्षक डिजाइन वाला एक अद्भुत और शक्तिशाली ट्रैक्टर है। पॉवरट्रैक 434 डीएस प्लस खेत पर प्रभावी काम के लिए सभी उन्नत तकनीक के साथ आता है। इस ट्रैक्टर में पावरट्रैक ट्रैक्टर्स की प्रसिद्ध डीजल सेवर तकनीक के साथ बनाया गया है जो पावर से समझौता किए बिना सर्वोत्तम ईंधन दक्षता देता है। इस लेख में आज हम आपको इस ट्रैक्टर के फीचर्स, स्पेसिफिकेशन्स और कीमत के बारे में विस्तार से जानकारी देंगे।

पॉवरट्रैक 434 डीएस प्लस ट्रैक्टर की इंजन पावर क्या है?

पॉवरट्रैक 434 डीएस प्लस ट्रैक्टर अब अधिक शक्तिशाली 28.33 किलोवाट 35 HP इंजन और एवीएल तकनीक के साथ आता है। ट्रैक्टर के इंजन में कंपनी ने 3 सिलिंडर प्रदान किए है साथ ही इस ट्रैक्टर की पीटीओ पावर 31 HP है।

पॉवरट्रैक 434 डीएस प्लस ट्रैक्टर के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन

- इस ट्रैक्टर में 8 Forward + 2 Reverse गियर्स आपको मिल जाता है। गियर्स की पोजीशन आपको सेण्टर शिफ्ट इस ट्रैक्टर में आपको मिल जाती है।
- पॉवरट्रैक 434 डीएस प्लस ट्रैक्टर अतिरिक्त सुरक्षा और सुविधा के लिए फैक्ट्री फिटेड बम्पर और टो हुक के साथ आता है।
- पॉवरट्रैक 434 डीएस प्लस ट्रैक्टर में प्रभावी कार्य के लिए मल्टीपल ट्रेड पैटर्न वाले टायर होते हैं। टायरों का साइज 6.00 x 16 फ्रंट टायर और 13.6 X 28 रिवर्स टायर है।
- पॉवरट्रैक 434 डीएस प्लस ट्रैक्टर अपनी श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ 1600 किलोग्राम की सेन्सी 1 लिफ्ट के साथ आता है। इस हेवी ड्यूटी लिफ्ट से आपको न केवल समान खेती के लिए बेहतर संवेदनशीलता मिलती है बल्कि उत्पादकता भी बढ़ती है।
- पॉवरट्रैक 434 डीएस प्लस ट्रैक्टर डनसजप च्संजम व्पस प्उउमतेमक क्पेब ठतांम के साथ आता है।
- पॉवरट्रैक 434 डीएस प्लस ट्रैक्टर में 50 लीटर का ईंधन टैंक इस ट्रैक्टर में आपको मिल जाती है। जिससे की आप लंबे समय तक बीना रूके कार्य कर सकते हो।

पॉवरट्रैक 434 डीएस प्लस ट्रैक्टर की कीमत क्या है?

पॉवरट्रैक 434 डीएस प्लस ट्रैक्टर की कीमत की बात करे तो इस ट्रैक्टर की कीमत 5.80–6.10 लाख रूपए तक है कीमत में कई स्थनो पर थोड़ा फर्क भी देखने को मिलता है। ट्रैक्टर की कीमत इस ट्रैक्टर के फीचर्स और इंजन पावर के हिसाब से निर्धारित की गयी है।

मेरीखेती अब 6 भाषाओ में उपलब्ध है

हिंदी | English | తెలుగు (Telugu) | ಕನ್ನಡ (Kannada) | ਪੰਜਾਬੀ (Punjabi) | தமிழ் (Tamil)

www.merikheti.com

New Holland कंपनी ने लॉन्च किया अपना नया ट्रैक्टर वर्कमास्टर 105

न्यू हॉलैंड (CNH का ब्रांड) भारत में सबसे शक्तिशाली और सुंदर ट्रैक्टर बनाता है। पिछले कई वर्षों से, कंपनी किसानों की समृद्धि और खेती में नवीनता लाने के लिए काम कर रही है। अब कपनी ने न्यू हॉलैंड वर्कमास्टर 105 ट्रैक्टर नामक एक नया ट्रैक्टर किसानों के लिए लॉन्च किया है। CNH इंडिया और S। ARC कंट्री मैनेजर और मैनेजिंग डायरेक्टर नरिन्दर मित्रा ने कहा कि वर्कमास्टर 105 ट्रैक्टर भारत में उच्च–हॉर्सपावर ट्रैक्टरों के लिए एक नया मानदंड स्थापित करेगा। यह ट्रैक्टर अमेरिका जैसे मांग वाले बाजारों में अपनी उपयोगिता साबित होचुका है, और हम उत्साहित हैं कि इसे भारतीय ग्राहकों के लिए पेश करेंगे। वर्कमास्टर 105 ट्रैक्टर, TREM & IV अनुपालन इंजन से सुसज्जित, भारतीय किसानों को नवीनतम तकनीक, उच्चतम गुणवत्ता और उत्कृष्ट प्रदर्शन प्रदान करता है। न्यू हॉलैंड (जो दुनिया भर में अपने उच्च हॉर्सपावर ट्रैक्टरों के लिए प्रसिद्ध है) ने पहले ही उत्तर अमेरिका के प्रतिस्पर्धी बाजारों में वर्कमास्टर 105 ट्रैक्टर श्रृंखला के 15,000 से अधिक इकाइयों को बेच दिया है।

वर्कमास्टर 105 ट्रैक्टर के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

- कंपनी ने वर्कमास्टर 105 ट्रैक्टर में नवीनतम और आधुनिक फीचर्स शामिल किए हैं। कम्पनी ने इस ट्रैक्टर में शक्तिशाली 106 हॉर्स पीटी इंजन लगाया है।
- ये इंजन 458 NM का टॉर्क बनाता है और 1800 से 2300 ERPM पर अच्छा काम करता है। ये ट्रैक्टर आउटपुट को स्थिर रखता है।
- इस ट्रैक्टर की परिचालन लचीलेपन, कम गियर परिवर्तन, कम आरपीएम गिरावट और कम पुनर्प्राप्ति अवधि से कृषि संचालन में स्थिरता मिलती है।
- वर्कमास्टर 105 ट्रैक्टर इलेक्ट्रोहाइड्रोलिक 4WD सिस्टम के साथ 3,500 kg की उठाने की क्षमता है।
- कम्पनी ने इस ट्रैक्टर में हवा से निलंबित सीटें दी हैं।
- वर्कमास्टर 105 में गंभीर परिस्थितियों में प्रदर्शन और स्थायित्व के लिए पीटीओ क्लच और वेट मल्टी–डिस्क मैन है।
- यह बैलेंसर–प्रकार के स्टीयरिंग के साथ हेवी–ड्यूटी फ्रंट एक्सल प्रदर्शन और स्थिरता देता है।

वर्कमास्टर 105 ट्रैक्टर की कीमत क्या है?

भारत के किसानों के लिए वर्कमास्टर 105 ट्रैक्टर (100+ HP TREM & IV) ट्रैक्टर की कीमत 29.5 से 29.70 लाख रूपए है। बड़े किसानों के लिए ये ट्रैक्टर बेहतर हो सकते हैं।

इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर: AutoNxt कंपनी के X45H2 इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर से होंगे सभी कार्य आसान

AutoNxt कंपनी कृषि क्षेत्र को विकसित करने के लिए इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर बनाती है। कंपनी का उद्देश्य यह है कि इससे किसानों की आय में वृद्धि होगी क्योंकि ये ट्रैक्टर डीजल की लागत कम करेंगे। AutoNxt X45H2 के फीचर्स, स्पेसिफिकेशन और मूल्य के बारे में विस्तार से आप यहां जानेंगे।

AutoNxt X45H2 इंजन पावर क्या है?

AutoNxt X45H2 ट्रैक्टर एक शक्तिशाली ट्रैक्टर है जो की 45 HP की इंजन पावर के साथ में आता है। ट्रैक्टर की बेटरी की पावर 32 KW है।

AutoNxt X45H2 की बैटरी कितने समय में चार्ज होती है?

इस बैटरी को चार्ज करने के लिए 8 घंटे का समय लगता है। मतलब की अगर आप एक बार ट्रैक्टर की बैटरी को चार्ज कर लेते है तो आप बिना रूके कई खेतों की जुताई कर सकते है। इस ट्रैक्टर के एक बार चार्ज होने के बाद आप इससे 8 घंटे लगातार कार्य कर सकते है। इस ट्रैक्टर से आप 8 एकड़ जमीन की जुताई बिना रूके कर सकते है। इस ट्रैक्टर में फसल स्वास्थ्य विश्लेषण जैसे स्मार्ट फीचर्स का उपयोग किया गया है। जिससे किसान फसल से सम्बंधित जानकारी प्राप्त कर सकते है।

AutoNxt X45H2 ट्रैक्टर के फीचर्स

- इस ट्रैक्टर के गियर बॉक्स में आटोमेटिक सिस्टम दिया गया है जिससे की किसानों को सुविधा मिलेगी।
- इस ट्रैक्टर में आपको फॉरवर्ड स्पीड भी अच्छी मिल जाती है।
- ऑटोनेक्सट X45H2 का स्टीयरिंग टाइप Smart electrically controlled पावर steering है।
- मेड इन इंडिया मोटर उच्च टॉर्क अनुप्रयोगों में काम करने के लिए लिक्विड कूल्ड और मजबूत है।
- AutoNxt X45H2 में 1800 Kg वजन उठाने की मजबूत क्षमता है।
- ऑटोनेक्सट X45H2 ट्रैक्टर मल्टीपल ट्रेड पैटर्न वाले टायर के साथ में आता है।
- AutoNxt X45H2 2 WD वेरिएंट में आता है।

AutoNxt X45H2 ट्रैक्टर की कीमत क्या है?

AutoNxt X45H2 ट्रैक्टर की कीमत भारतीय किसानों के बजट के अनुसार निर्धारित की गयी है। आप उमतपीमजप पर संपर्क कर सकते हैं अगर आप इस ट्रैक्टर की कीमत के बारे में कुछ जानना चाहते हैं क्योंकि कंपनी ने इस ट्रैक्टर की कीमत अभी सार्वजानिक नहीं की है। आपके पास AutoNxt इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर से संबंधित कोई और प्रश्न हैं, तो आप हमसे संपर्क कर सकते हैं।

सोलिस 6524S 4WD & 65 एचपी और 2500 KG वजन उठाने की क्षमता

ट्रैक्टर की मदद से किसान खेती के कई कठिन कार्यों को आसानी से पूरा कर सकते हैं। भारतीय किसानों के बीच सॉलिस ट्रैक्टर्स अपने अद्भुत गुणों और उत्कृष्ट कार्यक्षमता के लिए जाना जाता है। अगर आप भी कृषि ट्रैक्टर खरीदने की सोच रहे हैं तो इस लेख में हम आज आपके लेकर आए है सोलिस 6524S 4WD ट्रैक्टर

सोलिस 6524S 4WD इंजन पावर

- सोलिस 6524S 4WD Japanese Technology वाले पावरफुल इंजन के साथ में आता है।
- सॉलिस 6524एस ट्रैक्टर में 4710 सीसी की क्षमता वाला 4 सिलेंडर इंजन है, जो 65 एचपी पावर और 278 एनएम की टॉर्क उत्पन्न करता है।
- इस ट्रैक्टर में एक सूखी तरह की हवा का फिल्टर है, जो इंजन को धूल और मिट्टी से बचाता है।
- इस ट्रैक्टर का इंजन 2000 आरपीएम का उत्पादन करता है और उसकी मैक्स पीटीओ पावर 59.8 एचपी है।

सोलिस 6524S 4WD फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

- सोलिस 6524S 4WD ट्रैक्टर में 12 Forward + 12 Reverse गियर वाला गियरबॉक्स दिया गया है।
- यह ट्रैक्टर क्नंस क्लच में आता है और इसमें Synchromesh टाइप ट्रांसमिशन दिया गया है, कंपनी ने अपने इस ट्रैक्टर में Multi Disc Outboard OIB ब्रेक्स दिए है।
- सॉलिस 6524एस ट्रैक्टर में आपको पावर स्टीयरिंग देखने को मिल जाता है।
- 65 लीटर की क्षमता वाले फ्यूल टैंक इस ट्रैक्टर में शामिल है।
- सॉलिस 6524 एस ट्रैक्टर में Cat 2 Implements टाइप थ्री पॉइंट लिकेंज और 2500 kg की लिफ्टिंग क्षमता है। कम्पनी ने इस ट्रैक्टर को काफी मजबूत व्हीलबेस दिया है।

सोलिस 6524S 4WD की कीमत क्या है?

सॉलिस 6524एस ट्रैक्टर की एक्स शोरूम कीमत भारत में 10.50 लाख से 11.42 लाख रुपये है। रोड टैक्स और RTO रजिस्ट्रेशन के अनुसार, इस सॉलिस 6524S ट्रैक्टर का ऑन–रोड मूल्य अलग हो सकता है। इस सोलिस 6524S 4WD ट्रैक्टर को 5 साल की वारेन्टी मिलती है।

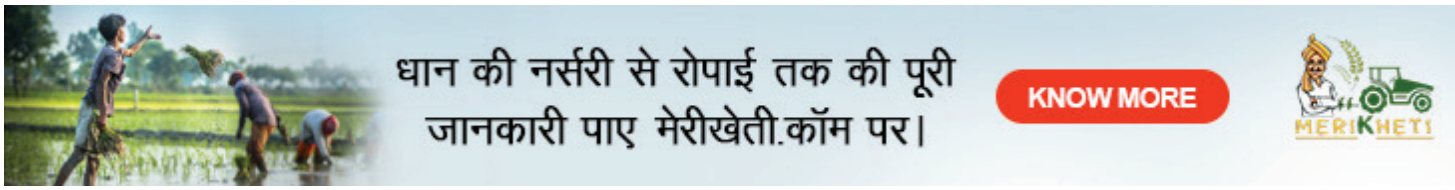

NAYA
SWARAJ,
MERA
SWARAJ
SWARAJ 744 FE
SWARAJ 855 FE

भारत में जैविक खेती के फायदे, चुनौतियाँ और भविष्य

भारत में जैविक खेती लगभग हजारों वर्षों से व्यापक हो गई है। भारत ने 1960 के दशक में कृषि में खनिजों पर आधारित खेती और प्रौद्योगिकी और विज्ञान के विकास के साथ "हरित क्रांति" देखी। कोई समस्या न होने पर, रसायन–आधारित कृषि रणनीति ने उच्च उत्पादन के अर्थ में बड़े लाभ उत्पन्न किए, जिसने तेजी से बढ़ती भारतीय आबादी के लिए पूरे देश को खाद्य असुरक्षा से बचाने में योगदान दिया। लेकिन इसका हमारे पारिस्थितिक तंत्र पर भी बहुत नकारात्मक प्रभाव पड़ा, जिससे मिट्टी के स्वास्थ्य में गिरावट, नए कीटों और बीमारियों का उद्भव, सहायक सूक्ष्मजीवों की हानि और हमारी खाद्य श्रृंखला में विषाक्त पदार्थों की शुरूआत जैसे नए मुद्दे पैदा हुए, जिससे हमारे देश के जीवमंडल के अस्तित्व को बहुत नुकसान हुआ हैं। इसलिए, यह माना गया कि पर्यावरण या संसाधनों को नुकसान पहुंचाए बिना इस प्रमुख क्षेत्र को विकसित करते हुए कृषि उत्पादकता और उत्पादन को संरक्षित करने के लिए एक और कृषि पद्धति की आवश्यकता थी। भूमि, जल, जैव विविधता और बाहरी इनपुट के आदर्श, संतुलित, कुशल और वैज्ञानिक प्रबंधन को प्राथमिकता देते हुए, इस सेटिंग में जैविक खेती एक विकल्प के रूप में विकसित हुई है।

जैविक खेती क्या हैं?

जैविक खेती में कीटनाशक, रसायन और कृत्रिम उर्वरक अक्सर प्रतिबंधित होते हैं। मृदा स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभावों से बचने वाली कृषि की विधियों के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता कृषि, पशु और फसल अपशिष्टों सहित बायोडिग्रेडेबल कचरे के उपयोग से बनी रहती है जिसमें जैविक घटक शामिल होते हैं। जैव विविधता, जैविक चक्र और मिट्टी की जैविक गतिविधि सहित कृषि–पारिस्थितिकी तंत्र स्वास्थ्य को जैविक कृषि द्वारा बढ़ावा और सुधार किया जाता है, जिसे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) द्वारा "एक अद्वितीय उत्पादन प्रबंधन प्रणाली" के रूप में परिभाषित किया गया है। इसमें सभी रासायनिक ऑफ–फार्म इनपुट को हटाना और ऑन–फार्म यांत्रिक, जैविक और कृषि संबंधी तरीकों को अपनाना शामिल है। खेती के तहत भूमि की उर्वरता को संरक्षित करने के लिए, जैविक खेती प्रणाली फसल चक्र, बची हुई फसल के उपयोग, पशु खाद और खेत से बाहर के जैविक कचरे को उच्च प्राथमिकता देती है। इसमें खनिज ग्रेड रॉक एक्स्ट्रा, पोषक तत्वों के आयोजन की एक जैविक प्रणाली और पौधों की सुरक्षा तकनी. कों का भी उपयोग किया जाता है।

भारत में जैविक खेती की स्थिति

वर्तमान में, पृथ्वी पर 58 मिलियन हेक्टेयर कृषि भूमि में से लगभग 1.2 प्रतिशत को जैविक माना जाता है। भारत में 5.71 मिलियन हेक्टेयर कृषि भूमि को जैविक घोषित किया गया है। इसमें से 1.49 मिलियन हेक्टेयर (या कुल क्षेत्रफल का 26%) उत्पादक है, और अन्य 4.22 मिलियन हेक्टेयर (या कुल क्षेत्र का 74%) वन और जंगली क्षेत्र हैं जिनका उपयोग लकड़ी–आधारित उत्पादों को इकट्ठा करने के लिए किया जाता है। 2016 में वैश्विक स्तर पर सभी जैविक कृषि उत्पादकों में से, भारत ने कुल 8,35,000 का योगदान दिया, इसलिए यह सबसे बड़ा उत्पादक था। वैश्विक स्तर पर, 2015 की तुलना में 2016 में जैविक खेती में 7.5 मिलियन हेक्टेयर की वृद्धि हुई। भारत में, उसी समय 0.3 मिलियन हेक्टेयर की वृद्धि देखी गई।

जैविक खेती क्षेत्र के लिए प्रमुख चुनौतियाँ

चूँकि भारत का संगठित जैविक खाद्य क्षेत्र अभी भी अपने प्रारंभिक चरण में है, जैविक उत्पादक कई चुनौतियों से जूझ रहे हैं जिनका उनकी आय और जीवन शैली पर प्रभाव पड़ता है। कई प्रमुख चुनौतियाँ ये हैं:

- पारंपरिक से जैविक खेती की ओर बढ़ने के पहले कई वर्षों में, इसमें उच्च इनपुट लागत और कम उपज होती है। चूँकि व्यावसायिक रूप से उपलब्ध जैव–खाद उत्पाद पूरी तरह से प्राकृतिक नहीं हो सकते हैं, वे प्रमाणन प्रक्रिया में विफल हो सकते हैं।
- किसानों को प्रभावित करने वाली मुख्य चुनौतियाँ प्रमाणन की उच्च लागत, धीमी प्रमाणन प्रक्रिया और इसका समर्थन करने के लिए संसाधनों की कमी हैं।
- हालाँकि किसान स्व–प्रमाणन भागीदारी गारंटी प्रणाली (पीजीएस–इंडिया) से सरकारी सब्सिडी प्राप्त करते हैं, लेकिन इन किसानों को अपने द्वारा उत्पादित उत्पादों को निर्यात करने का कोई अधिकार नहीं है।
- सरकार जैविक खाद और कीटनाशकों सहित जैविक खेती में उपयोग किए जाने वाले कृषि उत्पादों के लिए सब्सिडी प्रदान करने में विफल रहती है, जिससे विनिर्माण प्रक्रिया की लागत बढ़ जाती है।
- जैविक उत्पादन के असामान्य रूप से छोटे पैमाने के कारण जैविक खाद्य पदार्थों की बिक्री और वितरण श्रृंखला बेहद महंगी और अक्षम है।
- जैविक कृषि क्षेत्र को प्रभावित करने वाले कुछ मुख्य मुद्दे स्थानीय बाजारों और उत्पादों के लिए जैविक योजना की कमी है। जैविक खेती प्रक्रिया और लोगो के लिए लेबलिंग आवश्यकताओं के नियमों के अभाव में किसी सामान्य उत्पाद से जैविक वस्तु को पहचानना असंभव है। इसका परिणाम बेईमान व्यवहार होता है जिसमें व्यक्तियों का पैसा खर्च होता है क्योंकि उन्हें उचित मुआवजा नहीं मिलता है।

जैविक खेती को बढ़ावा देने के तरीके

1. शिक्षा और जागरूकता

किसानों और आम जनता को जैविक खेती के लाभों जैसे मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार, हानिकारक पदार्थों के उपयोग में कमी और बेहतर फसल पोषण के बारे में शिक्षित करना।

2. सरकारी प्रोत्साहन और नीतियां

सरकारों के पास ऐसे कानून बनाने का अधिकार है जो जैविक खेती को प्रोत्साहित करते हैं, जैसे कि वे जैविक खेती अपनाने वाले किसानों को मुआवजा लाभ या भुगतान प्रदान कर सकती हैं। इससे किसानों की जैविक खेती अपनाने की क्षमता बढ़ सकती है।

3. अनुसंधान और विकास के लिए समर्थन

जैविक खेती के तरीकों पर अध्ययन में निवेश करने से नई तकनीक और कृषि के बेहतर तरीकों का विकास हो सकता है जो अधिक लाभदायक और कुशल बन जाते हैं।

4. बाजारों तक पहुंच

जैविक उत्पादकों को अपनी उपज बेचने के तरीके उपलब्ध कराने से ग्राहकों की ओर से जैविक उत्पादों की मांग बढ़ेगी और अधिक किसानों को जैविक खेती के तरीकों पर स्विच करने के लिए बढ़ावा मिलेगा।

5. सामुदायिक भागीदारी

सामान्य आबादी के बीच जैविक खेती के लिए पहचान और समर्थन के बारे में जागरूकता विकसित करने से निर्माताओं को मदद के रिश्ते विकसित करने में मदद मिल सकती है। जैविक खेती और कृषि को बढ़ावा देने के लिए इन तरीकों का उपयोग करके भविष्य के लिए पर्यावरण की दृष्टि से स्वस्थ खाद्य प्रणाली विकसित की जा सकती है।

Crops

Coromandel Fantac Plus

Flusilazole 12.5% + Carbendazim 25% SE

Vegetables Crops

Horticultural Crops

भारत सरकार द्वारा किसान हित में चलाई जाने वाली योजनाएं

केंद्र सरकार की तरफ से किसानों के लिए बहुत सारी कल्याणकारी योजनाऐं चलाई जा रही हैं। पीएम मोदी ने किसानों की आय को दोगुना करने का वादा किया है। इस वादे को पूरा करने के लिए पीएम मोदी ने किसानों के हित में कई कल्याणकारी योजनाऐं जारी की हुई हैं। आज हम आपको केंद्र द्वारा जारी अहम योजनाओं के बारे में जानकारी देने वाले हैं।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम–किसान)

च्ड–किसान योजना का उद्देश्य देश भर के सभी भूमिधारक किसानों के परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान करना है ताकि वे कृषि तथा संबद्ध गतिविधियों के साथ–साथ घरेलू जरूरतों से संबंधित खर्चों को वहन करने में सक्षम हो सकें। कुछ अपवादों के साथ यह योजना खेती योग्य भूमि वाले किसान परिवारों को प्रतिवर्ष 6000 रुपए की सहायता राशि प्रदान करती है।

किसान उत्पादक संगठन (FPO)

सरकार ने वर्ष 2020 में 10,000 FPO के गठन और संवर्द्धनष के लिये केंद्रीय क्षेत्रक योजना (CSS) की शुरुआत की। FPO का गठन और संवर्द्धन काया. न्वयन एजेंसियों (IA) के माध्यम से किया जाता है, जो समूह आधारित व्यापार संगठनों (Cluster Based Business Organizations& CBBO) को 5 वर्ष की अवधि के लिये पेशेवर हैंडहोल्डिंग समर्थन (Professional Handholding Support) प्रदान करने के लिये संलग्न करती है, जिसमें संबंधित FPO की व्यवसाय योजना की तैयारी और निष्पादन भी शामिल है।

कृषि अवसंरचना कोष (AIF)

आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत जुलाई 2020 में 1 लाख करोड़ रुपए का कृषि अवसंरचना कोष बनाया गया था। AIF क्रेडिट गारंटी और ब्याज अनुदान के माध्यम से सामुदायिक कृषि परिसंपत्तियों एवं फसल की कटाई के बाद कृषि प्रबंधन की सतत परियोजनाओं में निवेश की एक मध्यम–दीर्घकालिक ऋण वित्तपोषण सुविधा है।

राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन (NBHM):

यह एक केंद्र प्रायोजित योजना है, जिसे वर्ष 2020 में आत्मनिर्भर भारत अभियान के भाग के रूप में पेश किया गया था। इसके कार्यान्वयन का उद्देश्य समग्र रूप से वैज्ञानिक विधि से मधुमक्खी पालन को आगे बढ़ाना और मीठी क्रांति के लक्ष्य को प्राप्त करना है।

खाद्य तेल–ऑयल पाम पर राष्ट्रीय मिशन (NMEO&OP)

यह एक केंद्र प्रायोजित योजना है, जिसे पाम ऑयल की खेती को बढ़ावा देने के लिये वर्ष 2021 में शुरू किया गया था। इसे मूलतः उत्तर–पूर्वी राज्यों और अंडमान–निकोबार द्वीपों पर ध्यान केंद्रित करने तथा खाद्य तेलों में भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिये शुरू किया गया था। यह अभियान वर्ष 2021–22 से वर्ष 2025–26 तक संचालित किया जाएगा, जो अगले 5 वर्षों में पाम ऑयल वृक्षारोपण के अंतर्गत उत्तर–पूर्वी राज्यों के 3.28 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल और शेष भारत के 3.22 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल अर्थात कुल 6.5 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल को कवर करेगा।

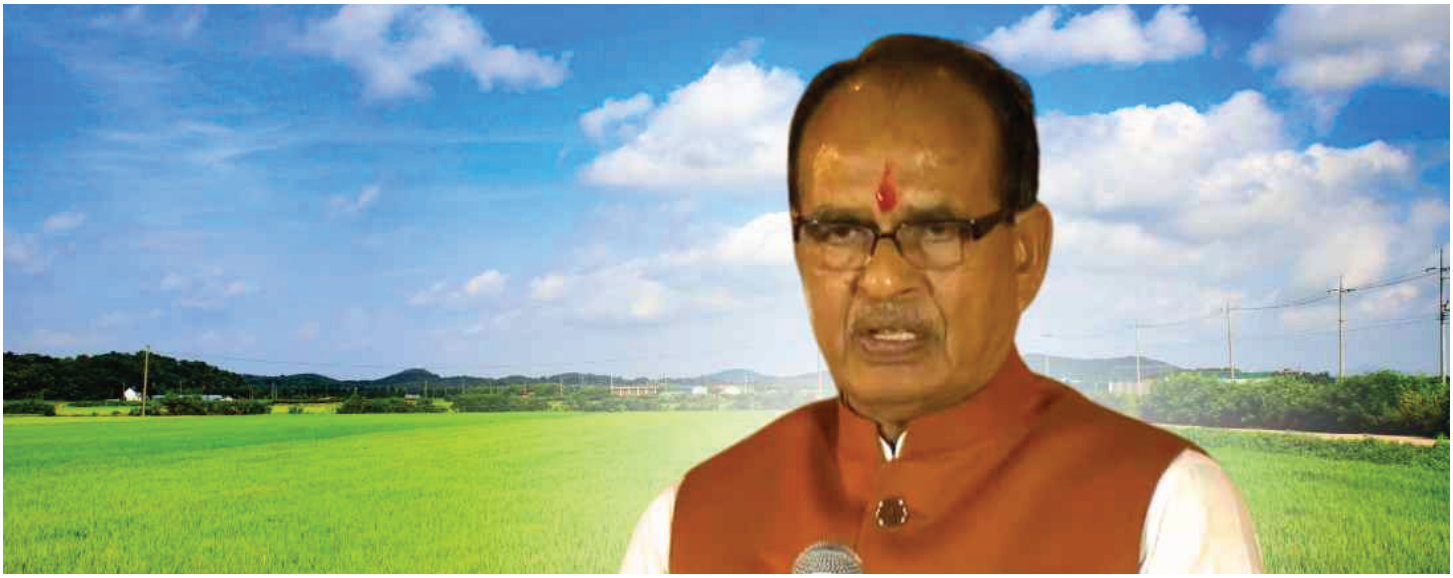

शिवराज सिंह चौहान ने ली कृषि मंत्री पद की शपथ किसानों के हित में करेंगे कार्य

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के तीसरे कार्यकाल के पहले दिन, उन्होंने ने कैबिनेट मंत्रियों को अलग–अलग विभागों में बांट दिया, जिसमें शिवराज सिंह को गांवों और किसानों की विकास की जिम्मेदारी दी गई है। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिव. राज सिंह चौहान, जिन्हें जनता के 'मामा' और 'भैया' के नाम से जाना जाता था, अब नई भूमिका में हैं। कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री के रूप में पदभार ग्रहण करने के बाद शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि वह पूरी क्षमता और मेहनत से किसानों को खुशहाल बनाने का काम करेंगे। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी इस नई भूमिका के लिए धन्यवाद दिया है।

बैठक में कौन – कौन उपस्थित थे?

विभाग मिलने के बाद, 10 जून 2024 को केंद्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान की एमपी भवन में पहली अनौपचारिक बैठक बुलाई गई। विभागों के मुख्य विषयों पर सामान्य जानकारी प्राप्त करके उन्होंने आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त किया। इस अधिकारिक बैठक में मनोज आहूजा (कृषि मंत्रालय के सचिव), शैलेंद्र सिंह (ग्रामीण विकास मंत्रालय के सचिव) और मनोज जोशी (भूमि संसाधन विभाग के सचिव) उपस्थित रहे।

इस अवसर पर शिवराज सिंह चौहान ने क्या कहां?

शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि कृषि और किसान कल्याण और ग्रामीण विकास दोनों तेजी से चल रहे हैं। चौहान ने कहा कि सरकार नई नहीं है, बल्कि पिछले दशक में काफी अच्छा काम हुआ है। हमने अपने संकल्प पत्र में किसान कल्याण और वन विकास के लिए एक मार्गचित्र बनाया है, जिसे हम आगे बढ़ाएंगे। किसानों का कल्याण प्रधानमंत्री मोदी जी और सरकार की पहली प्राथमिकता है। इसलिए पहली फाइल पर उनके हस्ताक्षर किसानों को सम्मान निधि देने के लिए थे।

अर्का किरण अमरुद किस्म की खेती करके क्रांति कुमार ने रचा इतिहासरू 7 लाख रुपये हुई उपज

पौष्टिक गुणों और स्वाद के कारण अमरूद हर उम्र के लोगों का पसंदीदा फल है। हम आज एक अमरूद किसान की कहानी बताने जा रहे हैं। इस किसान ने अमरूद की एक विशिष्ट प्रजाति की खेती करके लाखों रुपये कमाए। अब बाकी किसान भी इससे प्रेरित हो रहे हैं। दरअसल, बेंगलुरु के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ हॉर्टीकल्चर ने अमरूद की श्अर्का किरणश प्रजाति विकसित की है। यह अमरूद F1 हाइब्रिड किस्म किसान ने अपने खेत में बोया।

अमरूद की शानदार उपज देने वाली किस्म

आंध्र प्रदेश के प्रकाशम जिले में क्रांति कुमार ने अपने खेत में अमरूद की थ1 हाइब्रिड की खेती की, यह किस्म बहुत अच्छी है। यह समय से पहले फल देता है। इस किस्म का फल गोल, मध्यम आकार का और गहरा लाल होता है। इसमें 7.14 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम लाइकोपीन है। B-Tech ड्रॉप आउट कुमार प्रकाशम जिले के इसुका दारसी गांव में फलों की खेती करता है। उन्हें इस किस्म की खेती के बारे में जानकारी और ट्रेनिंग के लिए बेंगलुरु के ICAR का दौरा करना पड़ा। ICAR & IIHR के लाइसेंसधारी, मेसर्स ब्लूम इरिगेशन सिस्टम्स, प्राइवेट लिमिटेड, प्रशांति नगर, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश के कृष्णैया से फल को उगाने के लिए जरूरी सामान भी खरीदा।

कितने एकड़ में करते है खेती?

सितंबर 2018 में उन्होंने पांच एकड़ क्षेत्र में पौधे लगाए और फरवरी 2019 में 2 x 1 मीटर की दूरी पर 5 एकड़ में पौधे लगाए, अल्ट्रा हाई डेंसिटी मेडो ऑर्चर्ड विधि में अर्का किरण उगाने और जल्द से जल्द निवेश की लागत के बराबर कीमत पाने के लिए। कुमार ने आईसीएआर – आईआईएचआर की परंपराओं का पालन करते हुए अपने खेत में वनस्पति, पंचकाव्य, दशकाव्य, गोबर का घोल, जीवामूर्त और अग्निस्त्र जैसे ऑर्गेनक उर्वरक तैयार किए। अमरूद की फसल को सही तरह से बढ़ाने के लिए बीमारियों और कीटों को नियंत्रित करना भी महत्वपूर्ण था। उस पर नियंत्रण के लिए इस उर्वरक को पत्तियों पर पोषण के रूप में डालते थे।

खेती से कितना मुनाफा कमाया?

पहले वर्ष 7 टन और दूसरे वर्ष 20 टन का अनुमान था। वह लगातार 35,000 रुपये प्रति टन के हिसाब से बाजार में अपनी उपज बेच सके। साथ ही, वे 300 लीटर फलों का रस 15 रुपये प्रति टन बेचने में भी सफल रहे। अर्का किरण के सर्वश्रेष्ठ फलों के रंग, स्वाद और फसल की सही और उच्च कीमत के साथ शुद्ध रिटर्न मिलने से वह बहुत खुश थे। उन्हें पहले वर्ष 2.45 लाख रुपये की कमाई हुई, और दूसरे वर्ष 3 लाख रुपये प्रति एकड़ के निवेश से सात लाख रुपये की कमाई हुई। फलों की बिक्री के अलावा, वे फलों का रस भी बनाते थे, जिससे पहले साल में उन्हें 18 हजार रुपये की अतिरिक्त आय हुई। पहले साल ही उनकी आय 2,45,000 रुपये से 2,63,000 रुपये हो गई।

EICHER TRACTORS

EICHER 551 49 HP रेंज

जानदार शानदार

MERIKHETI

किसानो की बात
मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501
Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010